साहित्य गौरव

प्रथम सोपान

गद्य भाग

: प्रश्नोत्तर :

1.5 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) ***सीधे-सादे किसान धन आते ही किस ओर झुकते हैं?***

सीधे-सादे किसान धन हाथ आते ही धर्म और कीर्ति की ओर झुकते हैं।

2) *कानूनगो इलाके में आते तो किसके चौपाल में ठहरते?*
कानूनगो इलाके में आते, तो सुजान महतो के चौपाल में ठहरते।

3) *सुजान ने गाँव में क्या बनवाया?*
सुजान ने गाँव में एक पक्का कुँआ बनवाया।

4) *सुजान की पत्नी का नाम क्या है?*
सुजान की पत्नी का नाम बुलाकी है।

5) *सुजान के बड़े बेटे का नाम लिखिए।*
सुजान के बड़े बेटे का नाम भोला है।

6) *सुजान के छोटे बेटे का नाम क्या है?*
सुजान के छोटे बेटे का नाम शंकर है।

7) *कौन द्वार पर आकर चिल्लाने लगा?*
भिक्षुक द्वार पर आकर चिल्लाने लगा।

8) *बुढ़ापे में आदमी की क्या मारी जाती है?*
बुढ़ापे में आदमी की बुद्धि मारी जाती है।

9) *घर में किसका राज होता है?*
घर में उसी का राज होता है जो कमाता है।

10) *कटिया का ढ़ेर देखकर कौन दंग रह गयी?*
कटिया का ढ़ेर देखकर बुलाकी दंग रह गई।

11) *सुजान की गोद में सिर रखे किन्हें अकथनीय सुख मिल रहा था?*
बैलों को सुजान की गोद में सिर रखकर अकथनीय सुख मिल रहा था।

12) *भिक्षुक के गाँव का नाम लिखिए।*
भिक्षुक के गाँव का नाम अमोला है।

1.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) सुजान महतो की संपत्ति बढ़ी तो क्या करने लगा?

सुजान महतो की सम्पत्ति बढ़ी तो चित्त की वृत्ति धर्म की ओर झुक पड़ी। साधु-संन्तों का आदर-सत्कार होने लगा। बड़े अफसर गाँव में आते तो सुजान के चौपाल में ही ठहरते। वे उनकी देख-रेख अच्छी तरह से करते थे। भजन-भाव होने लगा। सुजान ने गाँव में एक पक्का कुआँ बनवाया, ब्रह्मभोज हुआ। पूरे गाँववालों को न्योता था। गया के यात्री गाँव में आकर ठहरे तो सुजान और उनकी पत्नी गया जाकर आए। आने के बाद यज्ञ और फिर ब्रह्मभोज। इस तरह के कार्य करने से गाँव के सभी लोग उनका आदर करने लगे।

2) घर में सुजान भगत का अनादर कैसे हुआ?

सुजान महतो सुजान भगत बनने के बाद धार्मिक और सत्कार्य करने लगे। घर के मामलों में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाते थे। इसलिए घरवालों की नज़रों में गिर गये। सुजान के हाथों से धीरे-धीरे अधिकार छीने जाने लगे। किस खेत में क्या बोना है, किसको क्या देना है, किससे क्या लेना है, किस भाव क्या चीज़ बिकी, ऐसी महत्वपूर्ण बातों में भी भगत जी की सलाह न ली जाती थी। उनके दोनों जवान बेटे बात-बात में उन पर फब्तियाँ कसते। उनकी पत्नी बुलाकी भी बेटों के पक्ष में थी। हद तब हो गई जब वे भिक्षुक को दान देने की स्वतंत्रता भी खो चुके। गाँव भर में सुजान का मान-सम्मान बढ़ता था और अपने घर में उसका मान सम्मान घट रहा था।

3) सुजान भगत पेड़ के नीचे बैठ कर क्या सोचता है?

पेड़ के नीचे बैठकर सुजान विचारों में मग्न हो गया। अपने ही घर में उसका यह अनादर। वह कोई अपाहिज नहीं, घर का सब काम करता है, फिर भी अनादर! उसी ने कमाया, उसी ने सब-कुछ किया, फिर भी कोई अधिकार नहीं! अब वह द्वार का कुत्ता है, जो रूखा-सूखा मिले, वही खाकर पड़ा रहे। ऐसे जीवन को धिक्कार है।

4) सुजान भगत को सबसे अधिक क्रोध बुलाकी पर क्यों आता है?

सुजान को सबसे अधिक क्रोध बुलाकी पर था। क्योंकि अपने बेटों को वह कुछ भी कहती नहीं, वह भी उन्हीं का साथ देती। रात-दिन मेहनत करके पसीना बहाया, गर्मी-सर्दी सब-कुछ सहा, पर आज भीख तक देने का अधिकार उसे नहीं। बुलाकी ने उसकी अभी तक कमाई खाई थीं,

पर आज उसका ही विरोध कर रही है। अब बुलाकी के बेटे प्यारे हैं और वह निखट्टू है। आज बुलाकी के बेटे हैं और वह उसकी माँ है। सुजन तो बाहर का आदमी है।

5) चैत के महीने में खलिहानों में सतयुग के राज का वर्णन कीजिए।

चैत का महीना था। खलिहानों में सतयुग का राज था। जगह-जगह अनाज के ढेर लगे हुए थे। यही किसानों का सफल जीवन हैं, जब गर्व से उनका हृदय फूलता है। सुजान अनाज भरकर देता और बेटे अंदर रख आते। कितने ही भाट और भिक्षुक भगत उसे घेरे रहते थे। उनमें वह भिक्षुक भी था, जो आठ महीने पहले भगत के द्वार से निराश लौटा था। लेकिन आज खूब-सारा अनाज देकर उसे बिदा किया।

6) सुजान भगत भिक्षुक को कैसे संतुष्ट करता है?

जब भिक्षुक सुजान के द्वार पर आता है तो सुजान कहता है – तुमसे जितना उठाया जा सकता है, उतना अनाज ले जाओ। भिक्षुक लोक-लाज से अधिक अनाज लेने में शर्मिंदा होता है, फिर भी सुजान उसे खूब-सारा अनाज चादर में भरकर देता है। उसे इसमें बड़ा आनंद आ रहा था।

7) सुजान भगत अपना खोया हुआ अधिकार फिर कैसे प्राप्त करता है?

बेटे और पत्नी से जो अनादर हुआ, उससे सुजान बहुत ही चिंतित था। उसे लगा कि अब तक जिस घर में राज किया, उसी घर में पराधीन बनकर वह नहीं रह सकता। उसे अधिकार चाहिए। वह इस घर पर दूसरों का अधिकार नहीं देख सकता। मंदिर का पुजारी बनकर नहीं रह सकता। उसी क्षण से वह कठोर परिश्रम करने लगा। रात भर बैलों का चारा काटता रहा, सुबह तक कटिया का पहाड़ खड़ा कर दिया। सवेरे ही हल लेकर खेत में पहुँचा। भोला जब किसानों के साथ हल लेकर खेत में पहुँचा तब तक सुजान आधा खेत जोत चुका था। दोपहर में भी विश्राम नहीं किया। डाँड फेंकना, अनाज बोना, खेत की सुरक्षा आदि इस प्रकार आठ महीने निरंतर परिश्रम किया। खेत ने सोना उगल दिया। बखारी में अनाज रखने की जगह न रही। इस तरह सुजान ने अपना खोया हुआ अधिकार फिर प्राप्त कर लिया।

1.7 निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे? [Text Book]

1) *'धरम के काम में मीन-मेष निकालना अच्छा नहीं।'*
यह वाक्य सुजान ने अपनी पत्नी बुलाकी से कहा।

2) *'दिन भर एक न एक खुचड़ निकालते रहते हैं।'*
यह वाक्य भोला ने अपनी माँ बुलाकी से कहा।

3) *'आधी रोटी खाओ, भगवान का भजन करो और पड़े रहो।'*
यह वाक्य बुलाकी ने अपने पति सुजान भगत से कहा।

4) *'क्रोधी तो सदा के हैं। अब किसी की सुनेंगे थोड़े ही।'*
यह वाक्य बुलाकी ने अपने बेटे भोला से कहा।

5) *'बाबा, इतना मुझसे उठ न सकेगा।'*
यह वाक्य भिक्षुक ने सुजान भगत से कहा।

6) *'आदमी को चाहिए कि जैसा समय देखे वैसा काम करे।'*
बुलाकी ने यह वाक्य सुजान से कहा।

1.8 ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए : [Text Book]

1) 'भगवान की इच्छा होगी, तो फिर रुपये हो जायेंगे। उनके यहाँ किस बात की कमी है?'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सुजान भगत' नामक कहानी से लिया गया है जिसके लेखक प्रेमचंद हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य को सुजान भगत ने बुलाकी से कहा कि ईश्वर के यहाँ किस बात की कमी है।

स्पष्टीकरण : एक बार जब गया के यात्री गाँव में आकर ठहरे, तो सुजान के यहाँ उनका भोजन बना। सुजान के मन में भी गया जाने की बहुत दिनों से इच्छा थी। यह अवसर देखकर वह भी चलने को तैयार हो गया। लेकिन बुलाकी ने कहा की अगले साल देखेंगे, हाथ खाली हो जाएगा। तब सुजान ने अगले साल क्या होगा, कौन जानता है, धर्म के काम को टालना नहीं चाहिए, ऐसा कहते हुए इस वाक्य को कहा।

2) 'अभी ऐसे बूढ़े नहीं हो गए कि कोई काम ही न कर सकें।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सुजान भगत' नामक कहानी से लिया गया है जिसके लेखक प्रेमचंद हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य को भोला अपने पिता के बारे में अपनी माँ बुलाकी से कहता है।

स्पष्टीकरण : एक दिन बुलाकी ओखली में दाल छाँट रही थी। एक भिखमँगा द्वार पर आकर चिल्लाने लगता है। भोला माँ से उसे कुछ देने के लिए कहता है, तो बुलाकी पूछती है कि तुम्हारे पिताजी क्या कर रहे हैं, तो व्यंग्य से भोला कहता है कि दिन भर एक न एक खुचड़ निकालते रहते हैं, सारा दिन पूजा-पाठ में ही निकल जाता है और अभी ऐसे बूढ़े नहीं हुए। इससे हमें पता चलता है कि सुजान का अनादर घर में कैसे होता रहा।

3) 'आदमी को चाहिए कि जैसा समय देखे वैसा काम करे।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सुजान भगत' नामक कहानी से लिया गया है जिसके लेखक प्रेमचंद हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य को बुलाकी अपने पति सुजान भगत से कहती है।

स्पष्टीकरण : सुजान महतो सुजान भगत बने, तो घर में उनका राज समाप्त हो गया। महत्वपूर्ण निर्णय माँ और बेटे ही लेते थे। जब द्वार पर चिल्ला रहे भिक्षुक को एक सेर अनाज तक दान देने की स्वतंत्रता सुजान खो देता है, उसे बड़ा दुःख हुआ। सबसे ज्यादा गुस्सा उसे अपनी पत्नी बुलाकी पर आया क्योंकि वह जानती थी कि कितनी मेहनत से उन्होंने इस घर को बनाया है। वे उदास होकर पेड़ के नीचे बैठकर सोचते रहते हैं, तब उनकी पत्नी आकर समझाने का प्रयत्न करती है कि घर में कमानेवाले का राज होता है। अब हम दोनों का निबाह इसी में है कि नाम के मालिक बने रहें और वही करें जो लड़कों को अच्छा लगे। आदमी को चाहिए कि जैसा समय होता है वैसा काम करे। इसी से जीवन सुगम होता है।

4) 'अब तक जिस घर में राज्य किया, उसी घर में पराधीन बनकर नहीं रह सकता।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सुजान भगत' नामक कहानी से लिया गया है जिसके लेखक प्रेमचंद हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य को सुजान भगत जब अपने ही घर में वह अपने आपको तिरस्कृत होता हुआ देखकर अपनी पत्नी बुलाकी से कहता है।

स्पष्टीकरण : जब सुजान भगत को पत्नी और पुत्रों से कुछ-न-कुछ सुनना पड़ता है, तो वह परेशान हो जाता है और अपनी पत्नी से कहता है कि एक समय था कि इस घर में मेरा ही राज था, पर आज मैं पराधीन हो गया हूँ। इस प्रकार वह अपनी मजबूरी बताता है।

5) 'अच्छा, तुम्हारे सामने यह ढेर है। इसमें से जितना अनाज उठाकर ले जा सको, ले जाओ।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सुजान भगत' नामक कहानी से लिया गया है जिसके लेखक प्रेमचंद हैं।

संदर्भ : सुजान भगत अपने द्वार पर आये हुए भिक्षुक से यह वाक्य कहता है।

स्पष्टीकरण : चैत का महीना था। हर जगह अनाज के ढेर लगे थे। किसानों को अपना जीवन सफल लगता है। सुजान भगत टोकरे में अनाज भर देता था और उसके दोनों लड़के टोकरे लेकर घर में अनाज रख आते थे। कई भिक्षुक भगतजी को घेरे हुए थे। उनमें आठ महीने पहले भगत के द्वार से निराश लौटकर गया हुआ भिक्षुक भी था। भगत ने उस भिक्षुक से पूछा कि क्यों बाबा आज कहाँ चक्कर लगाकर आये? तब भिक्षुक ने कहा कि अभी तो कहीं नहीं गया भगतजी, पहले तुम्हारे पास आया हूँ। तब सुजान भगत ने उस भिक्षुक से कहा कि "अच्छा, तुम्हारे सामने यह ढेर है। इसमें से जितना अनाज उठाकर ले जा सको, ले जाओ।"

6) 'जिसमें लाग नहीं, गैरत नहीं, वह जवान भी मृतक है।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सुजान भगत' नामक कहानी से लिया गया है जिसके लेखक प्रेमचंद हैं।

संदर्भ : लेखक प्रेमचंद ने पाठकों को लगन और मेहनत से किए गए परिश्रम के महत्व को बताया है।

स्पष्टीकरण : लेखक ने मानव जीवन में लाग के महत्व को समझाते हुए कहा है कि जिसमें लाग है, वह बूढ़ा भी जवान व्यक्ति के समान है, और जिसमें लाग नहीं वह जवान भी मृतक के समान है।

सुजान ने आठ महीने अविरल परिश्रम करने के उपरान्त सुख और अपने खोए हुए अधिकार को आज पुनः प्राप्त किया था। वह सुजान की लाग थी, उसी लाग और मेहनत ने सुजान को अमानुषीय बल प्रदान किया था।

1.9 वाक्य शुद्ध कीजिए :

1) *सुजान एक पक्का कुँआ बनवाया।*
सुजान ने एक पक्का कुँआ बनवाया।

2) *प्रातः काल स्त्री और पुरुष 'गया' चला गया।*
प्रातःकाल स्त्री और पुरुष 'गया' चले गए।

3) *मुझसे कल बहुत बड़ा भूल हुआ।*
मुझसे कल बहुत बड़ी भूल हुई।

4) *उसके हाथ काँप रही थी।*
उसके हाथ काँप रहे थे।

5) *सब यही कहेंगे कि भिक्षुक कितनी लोभी है।*
सब यही कहेंगे कि भिक्षुक कितना लोभी है।

1.10 कोष्टक में दिए गए कारक चिह्नों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए : (ने, से, की, का, को)

1) चैत ..... महीना था।
2) जो खर्च करता है, उसी ..... देता है।
3) अब इन व्यापारों ..... उसे घृणा होती थी।
4) भिक्षुक ..... भोला की ओर संदिग्ध नेत्रों से देखा।
5) तुम्हारे बेटों ..... तो कमाई है।

उः 1 - का; 2 - को; 3 - से; 4 - ने; 5 - की।

1.11 निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए :

1) *सुजान के खेत में कंचन बरसता है। (भविष्यत्काल में बदलिए)*
सुजान के खेत में कंचन बरसेगा।

2) *सुजान के मन में तीर्थ यात्रा करने की इच्छा थी। (वर्तमान काल में बदलिए)*
सुजान के मन में तीर्थयात्रा करने की इच्छा है।

3) *शंकर गाड़ी में नारियल भर कर लाता है। (भूतकाल में बदलिए)*
शंकर गाड़ी में नारियल भर कर लाता था।

1.12 अन्य लिंग रूप लिखिए :

भिखारी, पुजारी, आदमी, पिता, विद्वान, साधु, भगवान, स्त्री।

1) भिखारी – भिखारिन
2) पुजारी – पुजारिन
3) आदमी – औरत
4) पिता – माता
5) विद्वान – विदुषी
6) साधु – साध्वी
7) भगवान – भगवती
8) स्त्री – पुरुष

1.13 अन्य वचन रूप लिखिए :

घर, बात, अभिलाषा, लड़का, रोटी, भिक्षुक, महीना, टीका।

1) घर – घर
2) बात – बातें
3) अभिलाषा – अभिलाषाएँ
4) लड़का – लड़के
5) रोटी – रोटियाँ
6) भिक्षुक – भिक्षुक
7) महीना – महीने
8) टीका – टीकाएँ

1.14 विलोम शब्द लिखिए :

मुरझाना, जीवन, सुख, आशा, भलाई, सुंदर, मुश्किल।

1) मुरझाना × खिलना
2) जीवन × मृत्यु
3) सुख × दुःख
4) आशा × निराशा
5) भलाई × बुराई
6) सुंदर × कुरूप
7) मुश्किल × आसान

1.15 लिंग पहचानिए :

नम्रता, द्वार, इच्छा, बात, गुड़, कमाई, ढोलक, मजूरी, दूध, घी, चिंता, चारपाई, पानी, रोटी, अनाज, भोजन, धन, आँख, रूपया, फसल।

पुल्लिंग शब्द : द्वार, गुड़, दूध, घी, पानी, अनाज, भोजन, धन, रूपया।

स्त्रीलिंग शब्द : नम्रता, इच्छा, बात, कमाई, ढोलक, मजूरी, चिंता, चारपाई, रोटी, आँख, फसल।

2. कर्त्तव्य और सत्यता

— डॉ. श्यामसुन्दर दास

: प्रश्नोत्तर :

2.5 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) ***हम लोगों का परम धर्म क्या है?***
कर्त्तव्य करना हम लोगों का परम धर्म है।

2) ***कर्त्तव्य करने का आरम्भ पहले कहाँ से शुरू होता है?***
कर्त्तव्य करने का आरंभ पहले घर से ही शुरू होता है।

3) ***कर्त्तव्य करना किस पर निर्भर है?***
कर्त्तव्य करना न्याय पर निर्भर है।

4) ***कर्त्तव्य करने से क्या बढ़ता है?***
कर्त्तव्य करने से चरित्र की शोभा बढ़ती है।

5) *धर्म-पालन करने में सबसे अधिक बाधा क्या है?*

धर्म पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता है।

6) *मन ज्यादा देर तक दुविधा में पड़ा रहा तो क्या आ घेरेगी?*

यदि मन कुछ काल तक दुविधा में पड़ा रहा, तो स्वार्थपरता निश्चित रूप से आ घेरेगी।

7) *झूठ बोलने का परिणाम क्या होगा?*

झूठ बोलने का परिणाम यह होगा कि काम नहीं होगा और दुःख भोगना पड़ेगा।

8) *किसे सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है?*

सत्यता को सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है।

9) *जो मनुष्य सत्य बोलता है, वह किससे दूर भागता है?*

जो मनुष्य सत्य बोलता है, वह आडंबर से दूर भागता है और उसे दिखावा नहीं रुचता है।

10) *किनसे सभी घृणा करते हैं?*

झूठे से हर कोई घृणा करते हैं।

2.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) घर और समाज में मनुष्य का जीवन किन-किन के प्रति कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है?

कर्त्तव्य करने का आरंभ पहले घर से ही होता है, क्योंकि यहाँ लड़कों का कर्त्तव्य माता-पिता की ओर और माता-पिता का कर्त्तव्य लड़कों की ओर देख पड़ता है। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी, स्वामी-सेवक और स्त्री-पुरुष के परस्पर अनेक कर्त्तव्य हैं। घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं के परस्पर कर्त्तव्यों को देखते हैं। संसार में मनुष्य का जीवन कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है।

2) मन की शक्ति कैसी है?

'कर्त्तव्य और सत्यता' निबन्ध में डॉ. श्यामसुंदर दास कहते हैं कि हम लोगों के मन में एक ऐसी शक्ति है जो हमें सभी बुरे कामों को करने से रोकती है और अच्छे कामों की ओर हमारी प्रवृत्ति को झुकाती है। यह बहुधा देखा गया है कि जब कोई बुरा काम करता है तब बिना किसी के कहे आप ही लज़ाता है और मन में दुःखी होता है। इसलिए हमारा यह धर्म है कि हमारी आत्मा हमें जो कहे, उसके अनुसार हम करें। हमारा मन किसी काम को करने से हिचकिचाए और दूर भागे तब कभी उस काम को नहीं करना चाहिए। दृढ़विश्वास और साहस से मन को धर्म-पालन करने की ओर लगाना चाहिए।

3) धर्म-पालन करने के मार्ग में क्या-क्या अड़चनें आती हैं?

धर्म-पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है। मनुष्य के कर्त्तव्य-मार्ग में एक ओर तो आत्मा के भले और बुरे कामों का ज्ञान और दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरता रहती है। बस, मनुष्य इन्हीं दोनों के बीच में पड़ा रहता है और अंत में यदि उसका मन पक्का हुआ तो वह आत्मा की आज्ञा मानकर अपने धर्म का पालन करता है। यदि उसका मन कुछ काल तक द्विविधा में पड़ा रहा तो स्वार्थपरता निश्चय उसे आ घेरेगी और उसका चरित्र घृणा के योग्य हो जायेगा।

4) अंग्रेज़ी-जहाज बीच समुद्र में डूबते समय पुरुषों ने कैसे अपना धर्म निभाया?

जब अंग्रेजी-जहाज में छेद हो गया और वह डूबने की स्थिति में था, तब उसमें यात्रा करनेवाली स्त्रियों को नावों में बैठाकर बचा लिया गया। पुरुष पोत की छत पर चले गये; फिर भी जहाज़ डूब गया। इस प्रकार पुरुषों ने अपने प्राणों की चिंता किए बिना स्त्रियों को बचाने का कर्त्तव्य-पालन किया। उन्होंने यही अपना धर्म समझा कि अपने प्राण देकर स्त्रियों और बच्चों के प्राण बचाए जाए।

5) झूठ की उत्पत्ति और उसके कई रूपों के बारे में लिखिए।

झूठ की उत्पत्ति पाप, कुटिलता और कायरता के कारण होती है। बहुत से लोग अपने सेवकों को स्वयं झूठ बोलना सिखाते हैं। लोग नीति और आवश्यकता के बहाने झूठ की रक्षा करते हैं। कुछ लोग झूठ बोलने में अपनी चतुराई समझते हैं और सत्य को छिपाकर धोखा देने या झूठ बोलकर अपने को बचा लेने में ही अपना परम गौरव मानते हैं। झूठ बोलना और भी कई रूपों में दिखाई पड़ता है। जैसे चुप रहना, किसी बात को बढ़ाकर कहना, किसी बात को छिपाना, भेद बदलना, झूठ-मूठ दूसरों के साथ हाँ में हाँ मिलाना, प्रतिज्ञा करके उसे पूरा न करना, सत्य को न बोलना, इत्यादि।

6) मनुष्य का परम धर्म क्या है? उसकी रक्षा कैसे करनी चाहिए?

मनुष्य का परम धर्म है - 'सत्यता के साथ कर्त्तव्य पालन करना।' सत्य बोलने को सबसे श्रेष्ठ मानना चाहिए और कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए, चाहे उससे कितनी ही अधिक हानि क्यों न होती हो। सत्य बोलने से ही समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा और हम आनंदपूर्वक अपना समय बिता सकेंगे क्योंकि सच्चे को सब लोग चाहते हैं और झूठे से सभी घृणा करते हैं। यदि हम सदा सत्य बोलना अपना धर्म मानेंगे तो हमें अपने कर्त्तव्य-पालन करने में कुछ भी कष्ट न होगा और बिना किसी परिश्रम और कष्ट के हम अपने मन में संतुष्ट और सुखी बने रहेंगे। अपनी आत्मा के कहने के अनुसार दृढ़ विश्वास और साहस से काम लेकर सत्य की रक्षा करनी चाहिए।

7) 'कर्तव्य पालन और सत्यता के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है।' कैसे? स्पष्ट कीजिए।

कर्तव्य पालन और सत्यता के बीच बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। उसका वर्णन करते हुए डॉ. श्यामसुंदर दास कहते हैं - जो मनुष्य अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, वह अपने कामों और वचनों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है। वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कामों को करता है। संसार में कोई काम झूठ बोलने से नहीं चल सकता। यदि किसी घर के सब लोग झूठ बोलने लगें तो कोई काम न हो सकेगा और सब लोग बड़ा दुःख भोगेंगे। अतएव सत्यता को सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है।

2.7 ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए : [Text Book]

1) *'जिधर देखो उधर कर्त्तव्य ही कर्त्तव्य देख पड़ते हैं।'*

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कर्त्तव्य और सत्यता' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं।

संदर्भ : लेखक ने कर्त्तव्य के महत्व के बारे में बताते हुए इसे कहा है।

स्पष्टीकरण : लेखक कहते हैं कि कर्त्तव्य करना हम लोगों का परम धर्म है और जिसके न करने से हम लोग औरों की दृष्टि में गिर जाते हैं। कर्त्तव्य करने का आरम्भ पहले घर से ही होता है, क्योंकि यहाँ बच्चों का कर्त्तव्य माता-पिता की ओर और माता-पिता का कर्त्तव्य लड़कों की ओर दिखाई पड़ता है। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी, स्वामी-सेवक और स्त्री-पुरुष के परस्पर अनेक कर्त्तव्य हैं। घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं के परस्पर कर्त्तव्यों को देखते हैं। इस तरह समाज में जिधर देखों उधर कर्त्तव्य ही कर्त्तव्य दिखाई देते हैं।

2) *'कर्त्तव्य करना न्याय पर निर्भर है।'*

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कर्त्तव्य और सत्यता' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं।

संदर्भ : कर्त्तव्य करने की महत्ता का वर्णन करते हुए लेखक इस वाक्य को पाठकों से कहते हैं।

स्पष्टीकरण : डॉ. श्यामसुन्दर दास कहते हैं कि कर्त्तव्य करना हम लोगों का परम धर्म है। संसार में मनुष्य का जीवन कर्त्तव्यों से भरा पड़ा है। घर में, पारिवारिक सदस्यों के बीच और समाज में मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं के बीच मनुष्य को अपना कर्त्तव्य निभाना पड़ता है। समाज के प्रति, देश के प्रति सच्चा कर्त्तव्य निभाने से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कर्त्तव्य करना न्याय पर निर्भर है। ऐसे सामाजिक न्याय को समझने पर हम लोग प्रेम के साथ कर्त्तव्य निभा सकते हैं।

3) *'इसलिए हमारा यह धर्म है कि हमारी आत्मा हमें जो कहे, उसके अनुसार हम करें।'*

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कर्त्तव्य और सत्यता' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं।

संदर्भ : लेखक ने धर्म और आत्मा के बारे में कहा है कि हमारी आत्मा जो कहती है उसका पालन करना ही हमारा धर्म है।

स्पष्टीकरण : लेखक धर्म और आत्मा के बारे में कहते हैं कि हमारी आत्मा हमें जो कहती है, वही कार्य करना हमारा धर्म है। हमारा मन बड़ा विलक्षण है। यह हमें बुरे कर्म करने से रोकता है। चोरी करने के पश्चात् हमारा मन हमें पश्चाताप के लिए मजबूर करता है। बुरा कर्म करनेवाला लज्जित हो जाता है।

4) *'इसी प्रकार जो लोग स्वार्थी होकर अपने कर्त्तव्य पर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित होते हैं और सब लोग उनसे घृणा करते हैं।'*

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कर्त्तव्य और सत्यता' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य को लेखक वे स्वार्थी लोगों के स्वभाव के बारे में बताते हुए कहा हैं।

स्पष्टीकरण : लेखक स्वार्थी लोगों के बारे में कह रहे हैं कि जो स्वार्थी लोग अपने कर्त्तव्यों की ओर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित भी होते हैं और लोग उनसे घृणा भी करते हैं।

5) *'सत्य बोलने से ही समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा और हम आनंदपूर्वक हमारा समय बिता सकेंगे।'*

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कर्त्तव्य और सत्यता' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं।

संदर्भ : लेखक सत्यता की महत्ता का वर्णन करते हुए यह वाक्य पाठकों से कहते हैं।

स्पष्टीकरण : लेखक कर्त्तव्य और सत्यता के बारे में कहते हैं कि कर्त्तव्य करना हम लोगों का परम धर्म है। कर्त्तव्य और सत्यता के बीच घना सम्बन्ध है। यदि हम सत्यता के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे तो हमारे चरित्र की शोभा और बढ़ेगी। इसलिए हम सब लोगों का परम धर्म है कि सत्य बोलने को सबसे श्रेष्ठ मानें और कभी झूठ न बोलें, चाहे उससे कितनी ही अधिक हानि क्यों न होती हो। सत्य बोलने से ही समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा और हम आनंद पूर्वक अपना समय बिता सकेंगे क्योंकि सच्चे को सब चाहते हैं और झूठे से सभी घृणा करते हैं। अगर हम कर्त्तव्य पालन में सत्य मार्ग अपनाएँगे तो हम अपने मन में सदा संतुष्ट और सुखी बने रहेंगे।

2.8 वाक्य शुद्ध कीजिए :

1) *मन में ऐसा शक्ति है।*
   मन में ऐसी शक्ति है।

2) *तुम तुम्हारे धर्म का पालन करो।*
   तुम अपने धर्म का पालन करो।

3) *उसे दिखावा नहीं रुचती है।*
   उसे दिखावा नहीं रुचता है।

4) *लोगों ने झूठी चाटुकारी करके बड़े-बड़े नौकरियाँ पा लीं।*
   लोगों ने झूठी चाटुकारी करके बड़ी-बड़ी नौकरियाँ पा लीं।

5) *मनुष्य के जीवन कर्त्तव्य से भरा पड़ा है।*
   मनुष्य का जीवन कर्त्तव्य से भरा पड़ा है।

2.9 कोष्ठक में दिये गए उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :

(सम्मान, घृणा, सत्य, कर्त्तव्य, प्रवृत्ति)

1) सच्चाई की ओर हमारी ..... झुकती है।
2) मनुष्य का परम धर्म ..... बोलना है।
3) स्वार्थी लोग अपने ..... पर ध्यान नहीं देते।

4) कुत्सित लोगों से सभी ..... करते हैं।

5) सत्य बोलने से हमारा ..... होगा।

उत्तरः 1 - प्रवृत्ति; 2 - सत्य; 3 - कर्त्तव्य; 4 - घृणा; 5 - सम्मान।

2.10 निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए :

1) *झूठे से सभी घृणा करते हैं। (भविष्यत् काल में बदलिए)*
झूठे से सभी घृणा करेंगे।

2) *वह मेरी किताब की चोरी करता है। (भूतकाल में बदलिए)*
उसने मेरी किताब चोरी की।

अथवा

वह मेरी किताब चोरी करता था।

3) *हमारा जीवन सदा अनेक कार्यों में व्यस्त रहेगा। (वर्तमान काल में बदलिए)*
हमारा जीवन सदा अनेक कार्यों में व्यस्त रहता है।

2.11 लिंग पहचानिए :

शक्ति, काम, धर्म, दृष्टि, बात, नौकरी, मार्ग, मिठाई।

स्त्रीलिंग – दृष्टि, बात, नौकरी, मिठाई।

पुल्लिंग – मार्ग, काम, धर्म, शक्ति।

2.12 निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कीजिए :

चरित्र, स्वार्थ, धर्म, मान, सत्य।

उपसर्ग	+	शब्द	=	नए शब्द
1) सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र
2) निः	+	स्वार्थ	=	निःस्वार्थ
3) अ	+	धर्म	=	अधर्म
4) अप	+	मान	=	अपमान
5) अ	+	सत्य	=	असत्य

2.13 निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग कर लिखिए :

सत्यता, अस्थिरता, चंचलता, मनुष्यता, आवश्यकता, कायरता।

1) सत्यता = सत्य + ता

2) अस्थिरता = अस्थिर + ता

3) चंचलता = चंचल + ता

4) मनुष्यता = मनुष्य + ता

5) आवश्यकता = आवश्यक + ता

6) कायरता = कायर + ता

2.14 <u>अन्य वचन रूप लिखिए :</u>

नौकरी, स्त्री, रीति, वस्तु, आज्ञा।

1) नौकरी – नौकरियाँ
2) स्त्री – स्त्रियाँ
3) रीति – रीतियाँ
4) वस्तु – वस्तुएँ
5) आज्ञा – आज्ञाएँ

2.15 <u>विलोम शब्द लिखिए :</u>

प्रारम्भ, सत्य, धर्म, उन्नति, सफल, ऊँचा, अच्छा, आदर, निर्बल, स्थिर।

1) प्रारम्भ × अंत
2) सत्य × असत्य
3) धर्म × अधर्म
4) उन्नति × अवनति
5) सफल × विफल (असफल)
6) ऊँचा × नीचा
7) अच्छा × बुरा
8) आदर × अनादर
9) निर्बल × सबल
10) स्थिर × अस्थिर

3. गंगा मैया से साक्षात्कार

– डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी

3.5 **एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]**

1) *लेखक ने किनसे साक्षात्कार लिया है?*
लेखक ने गंगा मैया से साक्षात्कार (इंटरव्यू) लिया है।

2) *लेखक मकर-संक्रान्ति के दिन कहाँ थे?*
लेखक मकर-संक्रांति के दिन इलाहाबाद में थे।

3) *माँ कहाँ विराज रही थी?*
माँ मंदिर में विराज रही थी।

4) *माँ के चेहरे पर क्या थी?*
माँ के चेहरे पर उदासी थी।

5) *किसका संकट चर्चा का विषय बना हुआ है?*
'चरित्र का संकट' चर्चा का विषय बना हुआ हैं।

6) *गंगा मैया ने सत्य को क्या कहा है?*
गंगा मैया ने सत्य को निर्भय कहा है।

7) *किसका व्यापारीकरण हो रहा है?*
धर्म का व्यापारीकरण हो रहा है।

8) *असली झगड़ा किसके बारे में है?*
असली झगड़ा कुर्सी के बारे में है।

9) *मनुष्य के कुकर्मों पर कौन हँसने लगे हैं?*
मनुष्य के कुकर्मों पर पशु-पक्षी तक हँसने लगे हैं।

10) *गंगा मैया ने किसे सर्वशक्तिमान कहा है?*
गंगा मैया ने प्रकृति को सर्वशक्तिमान कहा है।

11) *पुनः उत्थान की किरणें कब फूटती हैं?*
पतन की जब पराकाष्ठा हो जाती है, तब पुनः उत्थान की किरणें फूटती हैं।

3.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) *प्रदूषण के संबंध में गंगा मैया ने क्या कहा है?*

प्रदूषण के सम्बन्ध में गंगा मैया कहती हैं कि पूरे देश का वातावरण ही जब प्रदूषित हो गया, तब मैं कैसे बच सकती हूँ। लोगों का मन दूषित हो गया है। स्वार्थी लोगों की संख्या बढ़ रही है। 'चरित्र का संकट' चर्चा का विषय बना हुआ है। सेवा करने से चरित्र बनता था। अब तो सब मेवा बटोरने में लग गए हैं। भक्ति, संस्कृति, आचरण के नाम पर जल स्रोतों को शुद्ध रखने की परिकल्पना भारतीय संस्कृति का अंग थी। लेकिन अब सब पैसों के लालच में पड़कर अपना सारा कचरा मुझमें ही डालते हैं इसलिए प्रदूषण बढ़ गय है। जो लोग कहते है कि गंगा में यह शक्ति है कि प्रदूषण अपने आप समाप्त होता जाता है, वे उल्लू के आस्थावान शिष्य है।

2) *समाज में कौन-कौन सी समस्याएँ बढ़ रही हैं?*

समाज में प्रदूषण की समस्या है जो दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। चरित्र का संकट भी है। चरित्र का अस्तित्व ही मिट गया है। क्योंकि सेवा करने से चरित्र बनता है। लेकिन अब सेवा ही मेवा बन गयी है। अब धर्म की भी एक समस्या है। देश में धर्म को जीवन से अलग कर रखा है। जब तक गीता जैसे धार्मिक ग्रंथों के अनुसार आचरण नहीं करते, तब तक अपेक्षित सुधार नहीं हो सकता। महँगाई, रिश्वतखोरी और पाशविकता बढ़ती चली जा रही है। धर्म का भी व्यापारीकरण हो रहा है। दलों में लड़ाई चलती है जो दलदल यानी कीचड़ पैदा करती है। लोग कुर्सी यानी अधिकार, धन, वैभव और सम्मान के लिए लड़ रहे हैं। पशु-पक्षी भी मनुष्य के कुकर्मों पर हँस रहे हैं।

3) *गंगा मैया का कुर्सी से क्या अभिप्राय है?*

गंगा मैया समाज में व्याप्त समस्याओं के बारे में कहती हैं - महँगाई, रिश्वतखोरी और पाशविकता बढ़ती चली जा रही है। धर्म का व्यापारीकरण हो रहा है। राजनीति के बारे में तो कहना ही क्या – सब कुर्सी के लिए झगड़ रहे हैं। कुर्सी का अर्थ है – शक्ति। शक्ति का अर्थ है – वैभव, धन, सम्मान, कीर्ति आदि। एक बार इसका चस्का जबान पे चढ़ जाय तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता। ये छिन जाए तो व्यक्ति ऐसा भटकता है जैसे मजनू लैला के पीछे पीछे घूमता था।

3.7 निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे? [Text Book]

1) *'आपने मेरे ज्ञान-चक्षु खोल दिए।'*

यह वाक्य लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी ने गंगा मैया से कहा।

2) *'चरित्र के अस्तित्व को किसने मिटाया?'*

यह प्रश्न लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी जी ने गंगा मैया से पूछा।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

3) *'कारण अलग-अलग बताते है पर असली झगड़ा कुर्सी का है।'*

गंगा मैया ने लेखक बरसाने लाल चतुर्वेदी से कहा।

3.8 ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए : [Text Book]

1) 'वत्स, देश का वातावरण ही जब प्रदूषित हो गया तब मैं कैसे बच सकती थी।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गंगा मैया से साक्षात्कार' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी हैं।

संदर्भ : यह वाक्य लेखक के प्रश्न का उत्तर देते हुए गंगा मैया कहती हैं।

स्पष्टीकरण : लेखक के प्रश्न का उत्तर देते हुए गंगा मैया कहती हैं कि मेरी स्वयं समझ में नहीं आ रहा कि यह हमारा देश इतना प्रदूषित क्यों हो रहा है। वत्स, देश का वातावरण ही जब प्रदूषित हो गया, तब मैं कैसे बच सकती थी। लोगों का मन दूषित हो गया है, भक्ति और संस्कृति के आचरण के नाम पर गंगा जैसे पवित्र जल को प्रदूषित करते हैं। सारा कचरा मुझमें डालते हैं, इसलिए देश का वातावरण प्रदूषित हो गया है।

2) 'बेटा, शब्दकोशों में उसका नाम शेष है, उपदेशकों के प्रयोग में भी आ रहा है।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गंगा मैया से साक्षात्कार' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य में लेखक को गंगा मैया चरित्र के संकट के विषय में बताते हुए यह वाक्य कहती हैं।

स्पष्टीकरण : 'साक्षात्कार' में लेखक को 'चरित्र' के बारे में गंगा मैया कहती है कि चरित्र तो अब केवल शब्दकोशों में बचा है, जिसका उपदेश देने के लिए प्रयोग किया जाता है। मास्टर भी छोटी कक्षाओं में कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

3) 'सेवाहि परमो धर्म' के स्थान पर लोग 'मेवाहि परमो धर्म' कहने लगे हैं।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गंगा मैया से साक्षात्कार' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी हैं।

संदर्भ : इसे गंगा मैया लेखक से मनुष्य के अधःपतन के बारे में कहती हैं।

स्पष्टीकरण : लेखक गंगा मैया से साक्षात्कार लेने गये। माँ मंदिर में विराज रही थीं। चेहरे पर उदासी थी। साक्षात्कार के दौरान गंगा मैया कहती हैं कि देश का वातावरण ही प्रदूषित हो गया है तो गंगा मैया कैसे बच सकती हैं। 'चरित्र का संकट' चर्चा का विषय बना हुआ है। अब केवल शब्द कोशों में 'चरित्र' शब्द शेष है। लेखक के पूछने पर कि चरित्र के अस्तित्व को किसने मिटाया, गंगा मैया उत्तर देती हैं कि पहले लोग चरित्रवान होते थे। सेवा करने से चरित्र बनता था लेकिन अब सभी मनुष्य स्वार्थी बनकर मेवा (रूपया) बटोरने में लगे हुए हैं। सेवा भाव पीछे छूट गया है।

4) 'एक बार जब जबान पे चढ़ जाए तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गंगा मैया से साक्षात्कार' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी हैं।

संदर्भ : इस वाक्य को गंगा मैया लेखक से साक्षात्कार के अन्तर्गत देश के कलुषित वातावरण के संदर्भ में कहती हैं।

स्पष्टीकरण : गंगा मैया देश के कलुषित वातावरण का वर्णन करते हुए कहती हैं – समाज में महँगाई, रिश्वतखोरी और पाशविकता बढ़ती चली जा रही है। धर्म का व्यापारीकरण हो रहा है। राजनीति के क्षेत्र में तो कहना ही क्या, दल से दल लड़ता रहता है। इन सबका कारण है – 'कुर्सी' के लिए झगड़ा। लेखक कहते हैं कि बाज़ार में खूब कुर्सियाँ उपलब्ध हैं, सस्ती और महँगी से महँगी। कुर्सी का तात्पर्य लेखक को स्पष्ट करते हुए गंगा मैया कहती हैं – कुर्सी से मेरा मतलब शक्ति और शक्ति माने वैभव, धन, सम्मान, कीर्ति आदि। एक बार जबान पर इसका चस्का लग गया तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता।

5) 'पतन की जब पराकाष्ठा हो जाती है तभी पुनः उत्थान की किरणें फूटती हैं।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गंगा मैया से साक्षात्कार' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी हैं।

संदर्भ : लेखक के अंतिम प्रश्न के उत्तर में गंगा मैया कहती हैं कि प्रकृति सर्वशक्तिमान है। ऐसा पहले भी हुआ है, पतन की जब पराकाष्ठा हो जाती है तभी पुनः उत्थान की किरणें फूटती हैं।

स्पष्टीकरण : लेखक जब अंतिम प्रश्न करता है कि माँ, भविष्य में क्या संभावनाएँ हैं? तब गंगा मैया कहती है कि यह प्रकृति सर्वशक्तिमान है। पतन जब अधिक होना शुरू हो जाता है, तभी उत्थान का मार्ग खुलता है।

3.9 वाक्य शुद्ध कीजिए :

1) मैंने जाकर माँ की चरण छुए।
मैंने जाकर माँ के चरण छुए।

2) वह एक दिन मेरा पास आया था।
वह एक दिन मेरे पास आया था।

3) उसे किसी की डर नहीं है।
उसे किसी का डर नहीं है।

4) पाशविकता बढ़ता चला जा रहा है।
पाशविकता बढ़ती चली जा रही है।

5) मैंने कभी भेदभाव नहीं की।
मैंने कभी भेदभाव नहीं किया।

3.10 कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :

(उदासी, अंत, सेवा, कुर्सियाँ, कावेरी)

1) ..... करने से चरित्र बनता है।

2) चेहरे पर ..... थी।

3) उस दिन दक्षिण की ..... बहिन मिली थी।

4) ..... तो बाज़ार में खूब उपलब्ध हैं।

5) इनका कोई ..... दिखलाई नहीं देता।

उत्तरः 1 - सेवा; 2 - उदासी; 3 - कावेरी; 4 - कुर्सियाँ; 5 - अंत।

3.11 <u>निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए :</u>

1) सेवा करने से चरित्र बनता था। (वर्तमान काल में बदलिए)

सेवा करने से चरित्र बनता है।

2) दल से दल लड़ता है। (भविष्यत् काल/भूतकाल में बदलिए)

दल से दल लड़ेगा। (भविष्यत् काल)

दल से दल लड़ता था। (भूतकाल)

3) असली झगड़ा कुर्सी का है। (भूतकाल में बदलिए)

असली झगड़ा कुर्सी का था।

3.12 <u>अन्य लिंग रूप लिखिए :</u>

सचिव, वत्स, शिष्य, उपदेशक, राज्यपाल।

1) सचिव – महिला सचिव (सचिवा)

2) वत्स – वत्सा 3) शिष्य – शिष्या

4) उपदेशक – उपदेशिका 5) राज्यपाल – राज्यपाल

3.13 <u>विलोम शब्द लिखिए :</u>

पवित्र, सस्ता, ज्ञान, दुःख, उत्थान।

1) पवित्र × अपवित्र 2) सस्ता × महँगा

3) ज्ञान × अज्ञान 4) दुःख × सुख

5) उत्थान × पतन

3.14 <u>निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कीजिए :</u>

मान, दूषण, भय, पुत्र, कीर्ति, कर्म।

1) मान = अप + मान = अपमान

2) दूषण = प्र + दूषण = प्रदूषण

3) भय = अ + भय = अभय

= (निर् + भय = निर्भय)

4) पुत्र = सु + पुत्र = सुपुत्र

5) कीर्ति = अप + कीर्ति = अपकीर्ति

6) कर्म = सत् + कर्म = सत्कर्म

= [(अ/सु) + कर्म = अकर्म/सुकर्म)]

4. एक कहानी यह भी

– मन्नू भंडारी

: प्रश्नोत्तर :

4.4 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : **[Text Book]**

1) *मन्नू भंडारी का जन्म किस गाँव में हुआ?*

मन्नू भंडारी का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में 1931 ई. में हुआ।

2) *अजमेर से पहले मन्नू के पिता कहाँ थे?*
अजमेर से पहले मन्नू के पिता इंदौर में थे।

3) *लेखिका की बड़ी बहन का नाम लिखिए।*
लेखिका की बड़ी बहन का नाम सुशीला था।

4) *पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटी कौन है?*
पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटी मन्नू भंडारी है।

5) *महानगर के फ्लैट में रहनेवाले लोग क्या भूल गए हैं?*
महानगर के फ्लैट में रहनेवाले लोग परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' भूल गए थे।

6) *पिता जी का आग्रह क्या था?*
पिता जी का आग्रह था कि मन्नू रसोई से दूर ही रहे।

7) *पिता जी रसोई घर को क्या कहते थे?*
पिता जी रसोई घर को भटियारखाना कहते थे।

8) *मन्नू भंडारी को प्रभावित करनेवाली हिन्दी प्राध्यापिका का नाम लिखिए।*
मन्नू भंडारी को प्रभावित करनेवाली हिन्दी प्राध्यापिका का नाम शीला अग्रवाल है।

9) *कॉलेज से किसका पत्र आया?*
कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया।

10) *पिता जी के अंतरंग मित्र का नाम लिखिए।*
पिता जी के अंतरंग मित्र डॉ. अंबालाल जी थे।

11) *शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है?*
शताब्दि की सबसे बड़ी उपलब्धि 15 अगस्त 1947 है।

12) *'एक कहानी यह भी' की लेखिका कौन हैं?*
'एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भंडारी हैं।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

13) *अंग्रेजी-हिन्दी विषयवार शब्दकोश के अधूरे काम को किसने पूरा किया?*
अंग्रेजी-हिन्दी विषयवार शब्दकोश के अधूरे काम को मन्नू भंडारी के पिता ने पूरा किया।

14) *मन्नू भंडारी ने 'महाभोज' उपन्यास में किस पड़ोसी के व्यक्तित्व को अभिव्यक्त किया?*
मन्नू भंडारी ने 'महाभोज' उपन्यास में 'दा साहब' के व्यक्तित्व को अभिव्यक्त किया।

4.5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) *मन्नू भंडारी के बचपन के बारे में लिखिए।*

मन्नू भण्डारी का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा नामक गाँव में हुआ। उनका बचपन अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के दो मंजिला मकान में गुजरा। वे अपने पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटी थीं।

उन्होंने बड़ी बहन सुशीला के साथ घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले – सतोलिया, लंगडी टाँग, पकड़म-पकड़ाई, काली-टीलो। उन्होंने गुड्डे-गुडियों के ब्याह रचाए और भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला। उनका रंग काला और बचपन में बहुत ही दुबली और मरियल भी थीं। गोरा रंग पिता की कमजोरी थी। इस काले रंग ने उनके भीतर हीन भावना पैदा कर दी जिससे नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद वे उबर नहीं पाईं।

2) पिता जी के प्रति लेखिका के क्या विचार थे?

लेखिका अपने पिता जी के बारे में कहती हैं – उनकी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था और नाम भी था। उन्होंने कई विद्यार्थियों को घर लाकर पढ़ाया भी था। उनकी दरियादिल की काफी चर्चाएँ होती थीं। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे, तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी भी थे।

3) लेखिका बचपन में कौन-कौन से खेल खेलती थीं?

लेखिका बचपन में भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा, पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतना तथा अपनी बहन सुशीला और पास पड़ोस की सहेलियों के साथ घर में सतोलिया, लँगड़ी-टाँग, पकड़म-पकड़ाई, काली-टीलो, गुड्डे-गुड़ियों के ब्याह आदि खेल खेलती थीं।

4) 'पड़ोस-कल्चर' के बारे में लेखिका क्या कहती हैं?

'पड़ोस कल्चर' के बारे में लेखिका मन्नू भंडारी कहती हैं कि उस जमाने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं। इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। लेकिन आज आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पडोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

5) शीला अग्रवाल का लेखिका पर क्या प्रभाव पड़ा?

लेखिका मन्नू भण्डारी हिन्दी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के बारे में कहती हैं कि उन्होंने ही उसे साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया। शीला अग्रवाल सावित्री गर्ल्स कालेज में जहाँ मन्नू हाईस्कूल पास कर फस्ट इयर कालेज में भर्ती हुई थीं, वहाँ हिन्दी की प्राध्यापिका थीं। उन्होंने मन्नू की आदत मात्र पढ़ने को, चुनाव करके पढ़ने में बदला। खुद चुन-चुनकर किताबें दी। पढ़ी हुई किताबों पर बहसें की। मन्नू की साहित्यिक दुनिया शरत्-प्रेमचंद्र से बढ़कर जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा तक फैल गयी। 'सुनीता', 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', 'त्याग पत्र', 'चित्रलेखा' जैसी किताबों पर मंथन किया गया। शीला अग्रवाल ने मन्नू को देश की परिस्थितियाँ जानने, समझने के लिए न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि देश की आज़ादी के लिए घर की चारदीवारी से खींचकर उसमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए भी जागृत किया।

6) पिता जी ने रसोई को 'भटियारखाना' क्यों कहा है?

पिता जी रसोई घर को भटियारखाना कहते थे। क्योंकि उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था। इसीलिए पिताजी का आग्रह रहता था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ।

7) एक दकियानूसी मित्र ने मन्नू भंडारी के पिता से क्या कहा?

पिता जी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिता जी की लू उतारी। उन्होंने कहा – "अरे उस मन्नू की तो मति मारी गई है, पर भंडारी जी आपको क्या हुआ हैं? आपने लड़कियों को आजादी दी, वह लड़कों के साथ हड़तालें करवाती, हुड़दंग मचाती फिर रही है। क्या लड़कियों को यह शोभा देता है? कोई मान-मर्यादा, इज्जत-आबरू का आपको ख्याल है या नहीं?"

8) मन्नू भंडारी की माँ का परिचय दीजिए।

मन्नू भंडारी की माँ उनके पिता के ठीक विपरीत थीं। वे पढ़ी-लिखी नहीं थीं। उनमें धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी। वे पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फरमाइश और जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं। उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं.... केवल दिया ही दिया।

4.6 निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे? [Text Book]

1) 'लौटकर बहुत कुछ गुबार निकल जाए तब बुलाना।'
इस वाक्य को लेखिका मन्नू भंडारी अपनी माँ से कहती है।

2) 'हमारे-आपके घरों की लड़कियों को शोभा देता है यह सब?'
यह वाक्य मन्नू भंडारी के पिता जी के एक दकियानूसी मित्र ने पिताजी से कहा।

3) 'बंद करो अब, इस मन्नू का घर से बाहर निकलना।'
यह वाक्य मन्नू भंडारी के पिताजी ने अपनी पत्नी से कहा।

4) 'आइ एम रिअली प्राउड आफ यू।'
यह वाक्य डॉ. अंबालाल ने लेखिका मन्नू भंडारी के पिताजी से कहा।

5) 'यू हैव मिस्ड समथिंग।'
यह वाक्य डॉ. अंबालाल ने मन्नू के पिताजी से कहा।

6) 'पर पिताजी! कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे वे।'
मन्नू भंडारी ने अपने मन में इसे सोचा।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

7) 'सारे कॉलिज की लड़कियों पर इतना रौब है तेरा...'
मन्नू के पिता ने मन्नू से कहा।

4.7 ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए : [Text Book]

1) 'एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।'

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक कहानी यह भी' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका मन्नू भण्डारी हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य में लेखिका स्वयं अपने पिता के स्वभाव का परिचय देते हुए इसे कहती हैं।

स्पष्टीकरण : मन्नू भण्डारी के पिताजी एक सुशिक्षित संवेदनशील व्यक्ति थे। जब वे इन्दौर में थे, तब उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। राजनीति के साथ-साथ समाज-सुधार के

कामों से भी जुड़े हुए थे। लेकिन एक बड़े आर्थिक झटके के कारण, अपनों के हाथों विश्वासघात किए जाने के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए। गिरती आर्थिक स्थिति, नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकाँक्षाएँ आदि के कारण वे बेहद क्रोधी और शक्की मिजाज के बन गए।

2) *'पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ।'*

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक कहानी यह भी' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका मन्नू भण्डारी हैं।

संदर्भ : लेखिका अपनी माँ का परिचय देते हुए यह वाक्य कहती हैं।

स्पष्टीकरण : मन्नू भण्डारी के पिताजी एक ओर बेहद कोमल और संवेदनशील शिक्षित व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी थे। एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण, गिरती आर्थिक स्थिति, नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ आदि के कारण वे क्रोधी और शक्की मिज़ाज के हो गए थे। लेकिन मन्नू की माँ पिता के ठीक विपरीत थीं। धरती माँ जैसी सहनशील। पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फरमाइश और जिद को पूरा करना अपना फर्ज़ समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं। उन्होंने जिन्दगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं, केवल दिया ही दिया।

3) *'यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी।'*

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक कहानी यह भी' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका मन्नू भण्डारी हैं।

संदर्भ : एक बार कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिता जी आकर मिलें। पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला होकर यह वाक्य अपनी पत्नी से कहते हैं।

स्पष्टीकरण : यश-कामना पिताजी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी। वे हमेशा सोचा करते कि कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि समाज में उनका नाम हो, सम्मान हो, वर्चस्व हो। अपने वर्चस्व को धक्का लगनेवाली किसी भी बात को वे बर्दाश्त नहीं कर पाते। एक बार कालेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि आपकी बेटी के खिलाफ अनुशासनात्मक कारवाई क्यों न की जाए। पत्र पढ़ते ही मन्नू के पिताजी आग-बबूला होकर उपरोक्त वाक्य कहते हैं।

4) *'वे बोलते जा रहे थे और पिता जी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था।'*

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक कहानी यह भी' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका मन्नू भण्डारी हैं।

संदर्भ : जब डॉ. अंबालाल जी पिता जी से मन्नू की तारीफ सुन रहे थे उस वक्त पिता जी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदल रहा था।

स्पष्टीकरण : आज़ाद हिन्द फौज के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कालेज, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था। शाम को अजमेर के पूरे विद्यार्थी वर्ग को सम्बोधित करते हुए मन्नू भंण्डारी ने एक बड़ा भाषण दिया। इस बीच उसके पिताजी के एक दकियानूसी मित्र ने घर आकर पिताजी से शिकायत की, व्यंग्य किया तो पिताजी आग बबूला हो गए। लेकिन पिताजी के एक बेहद अंतरंग मित्र डॉ. अंबालाल ने मन्नू की खूब प्रशंसा करते हुए बधाई दी। वे बोलते जा रहे थे और पिताजी का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था।

5) *'क्या पिता जी को इस बात का बिलकुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का रास्ता ही टकराहट का है?'*

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक कहानी यह भी' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका मन्नू भण्डारी हैं।

संदर्भ : इस वाक्य में लेखिका अपने पिता जी एवं स्वयं की विचार भिन्नता के बारे में कहती है।

स्पष्टीकरण : प्रस्तुत वाक्य में लेखिका अपने पिता के एवं स्वयं की विचार भिन्नता के बारे में कहती हैं कि कितनी तरह के अन्तर्विरोधों के बीच जीते थे वे! एक ओर 'विशिष्ट' बनने और बनाने की प्रबल लालसा, तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक छवि के प्रति सजगता। पर क्या यह संभव है? क्या पिता जी को इस बात का बिल्कुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का तो रास्ता टकराहट का है?

4.8 निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए :

1) *एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए थे। (वर्तमानकाल में बदलिए)*
एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गये हैं।

2) *वे जिंदगी भर अपने लिए कुछ माँगते नहीं हैं। (भूतकाल में बदलिए)*
उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ नहीं माँगा।

3) *उनका भाषण सुनते ही बधाई देता हूँ। (भविष्यत्काल में बदलिए)*
उनका भाषण सुनते ही बधाई दूँगा।

4.9 विलोम शब्द लिखिए :

पाप, नैतिक, सही, सम्भव, सुरक्षित, सक्रिय, व्यवस्थित।

1) पाप × पुण्य
2) नैतिक × अनैतिक
3) सही × गलत
4) सम्भव × असम्भव
5) सुरक्षित × असुरक्षित
6) सक्रिय × निष्क्रिय
7) व्यवस्थित × अव्यवस्थित

4.10 निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नए शब्दों का निर्माण कीजिए :

प्रतिष्ठित, हद, यश, क्रिया।

1) प्रतिष्ठित – अ + प्रतिष्ठित = अप्रतिष्ठित
2) हद – बे + हद = बेहद
3) यश – अप + यश = अपयश
4) क्रिया – प्रति + क्रिया = प्रतिक्रिया
(सु + क्रिया = सुक्रिया)

5. भारतरत्न विश्वेश्वरय्या

– डॉ. बालशौरि रेड्डी

: प्रश्नोत्तर :

5.5 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) विश्वेश्वरय्या का पूरा नाम लिखिए।

विश्वेश्वरय्या का पूरा नाम मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या था।

2) विश्वेश्वरय्या का जन्म कहाँ हुआ?

विश्वेश्वरय्या का जन्म मैसूर राज्य (अब कर्नाटक राज्य) के कोलार जिले के अन्तर्गत मुद्दनहल्ली नामक छोटे से गाँव में हुआ।

3) विश्वेश्वरय्या किसके बड़े पाबंद थे?

विश्वेश्वरय्या समय के बड़े पाबंद थे।

4) विश्वेश्वरय्या किस उम्र में असिस्टेंट इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए?

विश्वेश्वरय्या अपनी तेईस साल की उम्र में असिस्टेंट इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए।

5) विश्वेश्वरय्या ने किस बाँध के लिए आटोमैटिक गेटों का डिज़ाइन किया?

विश्वेश्वरय्या ने पूना के निकट 'खड़कवासला' नामक बाँध के लिए आटोमैटिक गेटों का डिज़ाइन किया था।

6) नौकरी से निवृत होने के बाद विश्वेश्वरय्या किस राज्य के सलाहकार के रूप में नियुक्त हुए?

नौकरी से निवृत होने के बाद विश्वेश्वरय्या हैदराबाद (आंध्र) राज्य के इंजीनियरिंग सलाहकार के रूप में नियुक्त हुए।

7) किस नदी में भयंकर बाढ़ आती थी?

मूसी नदी में भयंकर बाढ़ आती थी।

8) कावेरी नदी का बाँध किस नाम से मशहूर है?

कावेरी नदी का बाँध 'कृष्णराजसागर' नाम से मशहूर है।

9) १९५५ में भारत सरकार ने विश्वेश्वरय्या को किस उपाधि से विभूषित किया?

१९५५ में भारत सरकार ने विश्वेश्वरय्या को भारत की सर्वोच्च उपाधि 'भारत रत्न' से विभूषित किया।

10) विश्वेश्वरय्या की मृत्यु कब हुई?

१४ अप्रैल १९६२ को बेंगलूर में विश्वेश्वरय्या जी का निधन हुआ।

11) विश्वेश्वरय्या का जन्मदिन किस नाम से मनाया जाता है?

विश्वेश्वरय्या जी का जन्मदिन 'इंजीनियर्स डे' के रूप में मनाया जाता है।

5.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) विश्वेश्वरय्या के बाल्य जीवन के बारे में लिखिए।

विश्वेश्वरय्या का जन्म मैसूर राज्य (अब कर्नाटक राज्य) के कोलर जिले के अंतर्गत मुद्धेनहल्ली नामक एक छोटे से गाँव में 15 सितम्बर सन् 1861 को हुआ था। इनका पूरा नाम मोक्षगुंडम् विश्वेश्वरय्या था। विश्वेश्वरय्या के माता-पिता वहुत ही गरीव थे। उन्हें पढ़ाने-लिखाने की शक्ति उनमें नहीं थी। फिर भी विश्वेश्वरय्या के मन में पढ़ने की लगन थी। गाँव में प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर विश्वेश्वरय्या हाई स्कूल की शिक्षा पाने के लिए वेंगलूर पहुँचे। वेंगलूर में खर्चा चलना मुश्किल था। इसलिए विश्वेश्वरय्या अपने किसी एक रिश्तेदार के घर ठहर गये। ट्यूशन करके अपने दिन काटने लगे।

2) विश्वेश्वरय्या की शिक्षा के बारे में लिखिए।

विश्वेश्वरय्या की प्रारम्भिक शिक्षा कोलार जिले के मुद्देनहल्ली गाँव में ही हुई। हाईस्कूल की शिक्षा बेंगलूर में हुई। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण होने के वांद वे वेंगलूर में ही सेंट्रल कालेज में भर्ती हुए। वहीं से उन्होंने बी.ए. उत्तीर्ण किया। फिर सेंट्रल कॉलेज के प्रिन्सिपल की सिफारिशी पत्र पर पूना के साइन्स कॉलेज में इंजीनियरिंग सीठ भी मिला साथ उनको छात्र-वृत्ति भी मिल गई। फलस्वरूप बम्बई विश्वविद्यालय भर में इंजीनियरिंग परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम निकले।

3) विश्वेश्वरय्या की प्रसिद्धि तथा पदोन्नति देख कुछ इंजीनियर क्यों जलते थे?

विश्वेश्वरय्या की प्रसिद्धि तथा पदोन्नति देखकर कुछ इंजीनियर उनसे ईर्ष्या करने लगे थे। इसके दो कारण थे – एक तो विश्वेश्वरय्या की उम्र उस वक्त केवल सैंतालीस की थी और दूसरी बात वे अनेक पुराने तथा सीनियर इंजीनियरों से वेतन तथा पद की दृष्टि से भी आगे वढ़ गये थे। वे सूपरिन्टेंडिंग इंजीनियर पहले ही से थे। हर वात में उनकी सलाह ली जाती थी। इसे देखकर अनेक इंजीनियरों में असंतोष और ईर्ष्या की भावना घर कर गई थी।

4) हैदराबाद नवाब के सामने कौन-सी मुसीबत थी? उसका समाधान विश्वेश्वरय्या ने कैसे किया?

जब विश्वेश्वरय्या हैदराबाद राज्य के इंजीनियरिंग सलाहकार थे, उन दिनों हैदराबाद रियासत पर निज़ाम नवाब का शासन था। उनके सामने एक मुसीवत आ खड़ी हुई थी। हर वर्ष मूसी नदी में भयंकर बाढ़ आती थी। इस वजह से खूब तबाही होती थी। उस बाढ़ का पानी हैदराबाद नगर में घुस आता था, जिससे सारे काम-काज बंद हो जाते थे। विश्वेश्वरय्या ने मूसी नदी के पानी को काबू करने की योजना बनाई, बाँध भी बनवाया। साथ ही हैदराबाद नगर के लिए पानी तथा नालियों का भी बड़ा अच्छा इन्तजाम किया, जिससे नवाब साहब की मुसीबत टल गई।

5) मैसूर राज्य के विकास में विश्वेश्वरय्या के योगदान के बारे में लिखिए।

मैसूर राज्य के विकास में विश्वेश्वरय्या का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। कावेरी नदी पर बाँध जो अब कृष्णराजसागर नाम से मशहूर है, उसे बनाने का पूरा श्रेय श्री विश्वेश्वरय्या को जाता है। इस बाँध से जहाँ उद्योगों के लिए बिजली प्राप्त हुई, वहीं पर हजारों एकड़ भूमि की सिंचाई के लिए पानी भी मिला। 'बृंदावन गार्डन्स' जो के.आर.एस. डैम के पास बनाया गया है, उसे देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं। मैसूर की शासन-व्यवस्था सुदृढ़ करने के लिए पंचायतों की रचना की। गाँव और शहरों में जनता के द्वारा प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ। जनता और सरकार के बीच सहयोग बढ़ा। फलस्वरूप राज्य का अच्छा विकास हुआ। मैसूर राज्य के लिए अपना एक बैंक भी बनाया। मैसूर के लिए एक विश्वविद्यालय की स्थापना की। इस तरह शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास में भी उन्होंने भरपूर योगदान दिया।

6) विश्वेश्वरय्या के गुण-स्वभाव का परिचय दीजिए।

सर एम. विश्वेश्वरय्या एक कर्मयोगी थे। वे समय के पाबन्द थे। वे समय के सदुपयोग के बारे में अच्छी तरह जानते थे। समय पर अपने सभी काम करते थे। उन्होंने जीवन पर्यंत विश्राम नहीं लिया। वे सदा मेहनत करते थे, दूसरों से भी यही आशा रखते थे। वे सेवाभाव को अत्यंत पवित्र आचरण मानते थे। जिन्दगी भर देश की तथा मानव-समाज की सेवा में लगे रहे। उनका चरित्र आदर्शपूर्ण था। वे विनयशील तथा साधु प्रकृति के थे। ईमानदारी तो उनके चरित्र की अटूट अंग ही थी। असाधारण प्रतिभा रखते हुए भी उन्होंने कभी गर्व का अनुभव नहीं किया। अपने श्रम और स्वावलम्बन द्वारा कोई भी शिखर तक पहुँच सकता है, इसके जबर्दस्त प्रमाण है - विश्वेश्वरय्या।

5.7 **कोष्ठक में दिए गये कारक चिह्नों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए : (का, के, को, में)**

1) बैंगलोर ..... खर्च चलाना मुश्किल था।
2) विश्वेश्वरय्या समय ..... बड़े पावंद थे।
3) सिंध ..... बहुत बड़ा भाग रेगिस्तान है।
4) पानी ..... इकट्ठा करना था।

उत्तरः 1 - में; 2 - के; 3 - का; 4 - को।

5.8 **अन्य लिंग रूप लिखिए :**

सदस्य, पिता, छात्र, महाराजा, पुरुष।

1) सदस्य - सदस्या
2) पिता - माता
3) छात्र - छात्रा
4) महाराजा - महारानी
5) पुरुष - स्त्री

5.9 **अन्य वचन रूप लिखिए :**

नाली, माता, सेवा, व्यवस्था, योजना, कारखाना।

1) नाली - नालियाँ
2) माता - माताएँ
3) सेवा - सेवाएँ
4) व्यवस्था - व्यवस्थाएँ
5) योजना - योजनाएँ
6) कारखाना - कारखाने

5.10 **विलोम शब्द लिखिए :**

असाधारण, अच्छा, दीर्घायु, विश्वास, साकार।

1) असाधारण × साधारण
2) अच्छा × बुरा
3) दीर्घायु × अल्पायु
4) विश्वास × अविश्वास
5) साकार × निराकार

5.11 **निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

विश्वेश्वरय्या मैसूर राज्य के निवासी थे। उन्हें अपनी मातृभूमि की सेवा करने में आनंद का अनुभव हुआ। वे मैसूर के चीफ़ इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए। इस पद पर उन्होंने तीन वर्षों तक कार्य किया। विश्वेश्वरय्या की कार्यकुशलता एवं शासन पटुता पर महाराज मुग्ध हुए। उन्होंने तीन साल बाद विश्वेश्वरय्या जी को अपना दीवान नियुक्त किया। इस पद पर वे छह साल तक कार्य करते रहे। इन नौ वर्षों की अवधि में विश्वेश्वरय्या ने अपनी योजनाओं पर अमल करके मैसूर राज्य का नक्शा ही बदल डाला।

प्रश्न :

1) विश्वेश्वरय्या किस राज्य के निवासी थे?
2) विश्वेश्वरय्या ने मैसूर राज्य के चीफ़ इंजीनियर के पद पर कितने वर्षों तक कार्य किया?
3) महाराज विश्वेश्वरय्या के किन गुणों पर मुग्ध हुए?
4) महाराज ने विश्वेश्वरय्या को किस पद पर नियुक्त किया?
5) विश्वेश्वरय्या ने अपनी योजनाओं के द्वारा किस राज्य का नक्शा ही बदल डाला?

उत्तर:

1) विश्वेश्वरय्या मैसूर राज्य के निवासी थे।
2) विश्वेश्वरय्या ने मैसूर राज्य के चीफ इंजीनियर के पद पर तीन वर्षों तक कार्य किया।
3) महाराज विश्वेश्वरय्या की कार्यकुशलता एवम् शासन पटुता पर मुग्ध हुए।
4) महाराज ने विश्वेश्वरय्या को अपना दीवान नियुक्त किया।
5) विश्वेश्वरय्या ने अपनी योजनाओं के द्वारा मैसूर राज्य का नक्शा ही बदल डाला।

: प्रश्नोत्तर :

9.4 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) रैदास किसकी रट लगाए हुए हैं?

रैदास राम की रट लगाए हुए हैं।

2) अंग-अंग में किसकी सुगंध समा गई है?

अंग-अंग में चंदन की/प्रभु की भक्ति का सुगंध समा गई है।

3) चकोर पक्षी किसे देखता रहता है?

चकोर पक्षी चान्द को देखता रहता है।

4) रैदास अपने आपको किसका सेवक मानते हैं?

रैदास अपने आपको प्रभु राम जी का सेवक मानते हैं।

5) रैदास किस प्रकार जीवन का निर्वाह करने के लिए कहते हैं?

रैदास श्रम या मेहनत करके जीवन का निर्वाह करने के लिए कहते हैं।

6) रैदास के अनुसार कभी भी क्या निष्फल नहीं जाता?

रैदास के अनुसार कभी भी नेक कमाई निष्फल नहीं जाती।

7) रैदास किस राज्य की कामना करते हैं?

रैदास ऐसे राज्य की कामना करते हैं, जहाँ सभी को अन्न मिले।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

8) रैदास अगर मोर हैं तब प्रभु जी क्या हैं?

रैदास अगर मोर हैं तब प्रभु जी धन या बादल है।

9) प्रभु जी के दीपक बनने पर रैदास क्या बन जाते हैं?

प्रभु जी के दीपक बनने पर रैदास जी बाती या बत्ती बन जाते हैं।

10) प्रभु जी अगर मोती हैं तो धागा कौन है?

प्रभु जी अगर मोती है तो धागा रैदास जी है।

11) 'सोने मिलत सुहागा' मुहावरे का क्या अर्थ है?

'सोने मिलत सुहागा' मुहावरे का अर्थ है खुशी के मौके पर एक और खुशी का मिलना।

12) रैदास भगवान से किस प्रकार की भक्ति करते हैं?

रैदास भगवान से 'दास्यभाव' की भक्ति करते हैं।

13) रैदास कब प्रसन्न रहेंगे?

जब सभी समान हो जाएंगे तब रैदास प्रसन्न रहेंगे।

9.5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) रैदास ने भगवान और भक्त के संबंध को कैसे वर्णित किया है?

कवि संत रैदास जी भक्त और भगवान का अटूट सम्बन्ध बताते हुए कहते हैं कि प्रभुजी आप चंदन हैं तो हम पानी हैं, आप यदि घना वन या जंगल हैं तो हम मोर हैं, आप यदि दीपक हैं तो हम बाती हैं, आप यदि मोती हैं तो हम धागा हैं और यदि आप स्वामी हैं तो हम आपके दास हैं; फिर हमारा संबंध अलग कैसे हो सकता है?

2) परिश्रम के महत्व के प्रति रैदास के क्या विचार हैं?

परिश्रम के महत्व के प्रति रैदास जी कहते हैं कि संसार के हर मनुष्य को सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। उनके अनुसार श्रम, लगन, निष्ठा व ईमान से किया गया प्रत्येक कार्य श्रेष्ठ व फलदायक होता है। मांगकर खाने की जगह परिश्रम की कमाई पर निर्भर रहना चाहिए। जो मनुष्य मेहनत करेगा, पसीना बहाएगा, उसका परिणाम सदा अच्छा ही होगा। ऐसे नेक कमाई कभी निष्फल नहीं होगी।

3) रैदास ने किस प्रकार के राज्य का वर्णन किया है?

संत रैदास ने रामराज्य का वर्णन किया है। वे कहते हैं – ऐसा राज्य होना चाहिए जिसमें सभी प्रजा को अन्न (आहार) मिले, जहाँ छोटे-बड़े, धनी-गरीब, दीन-दलित सभी को समान अधिकार मिले। सभी समान रूप से, सौहार्दता से जिएँ। वे परिश्रम करके खुशहाल रहें।

9.6 ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : [Text Book]

1) अब कैसे छूटै राम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी,
जाकी अंग-अंग बास समानी।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'रैदासबानी' से लिया गया है जिसके रचयिता संत रैदास हैं।

संदर्भ : कवि ने भगवान के प्रति पूरे समर्पण भाव को स्वीकारते हुए स्वयं को पानी तथा प्रभु को चंदन के रूप में स्वीकार किया है।

भाव स्पष्टीकरण : रैदास जी कहते हैं कि अब उनका मन राम में लग गया है। वह अब प्रभु-भक्ति से छूटेगा नहीं। वे कहते हैं – प्रभु जी चन्दन के समान है और हम पानी के समान है जिसके शरीर पर लगने से अंग-अंग सुगंध से भर गया है। प्रभु जी बादल के समान हैं और भक्त मोर के समान। आसमान में बादल दिखते ही मोर नाच उठता है। वैसे ही प्रभु का नाम सुनते ही भक्त रोमांचित हो जाता है। जिस प्रकार चकोर पक्षी चाँद को निहारता है वैसे ही रैदास प्रभु की ओर निहारते रहते हैं।

विशेष : अलंकारः अंत्यानुप्रास, दास्य भक्ति, शरणागत तत्व।

10. सूरदास के पद

– सूरदास

: प्रश्नोत्तर :

10.4 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) *अपने आपको कौन भाग्यशालिनी समझ रही हैं?*

अपने आपको गोपिकाएँ भाग्यशालिनी समझ रही हैं।

2) *गोपिकाएँ किसे संबोधित करते हुए बातें कर रही हैं?*

गोपिकाएँ उद्धव को संबोधित करते हुए बातें कर रही हैं।

3) *श्रीकृष्ण के कान में किस आकार का कुंडल है?*

श्रीकृष्ण के कान में मकर के आकार का कुंडल है।

4) *वाणी कहाँ रह गई?*

वाणी मुखद्वार तक आकर रुक गई।

5) *कौन अंतर की बात जानने वाले हैं?*

सूरदास के प्रभु कृष्ण अंतर की बात जानने वाले हैं।

6) *श्रीकृष्ण के अनुसार किसने सब माखन खा लिया?*

श्रीकृष्ण के अनुसार बाल सखा ने सब माखन खा लिया हैं।

7) *सूरदास किसकी शोभा पर बलि जाते हैं?*

सूरदास कृष्ण और गोपी की शोभा पर बलि जाते हैं।

10.5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) गोपिकाएँ अपने आपको क्यों भाग्यशालिनी समझती हैं?

गोपिकाएँ अपने आपको भाग्यशालिनी समझती हैं क्योंकि जिन आँखों से उद्धव ने श्रीकृ को देखा था, वे आँखें अब उन्हें मिल गई हैं अर्थात् गोपिकाएँ उद्धव के आँखों में श्याम की श्याम की मूरत देख रहें हैं। जैसे भौंरें के प्रिय सुमन की सुगंध को हवा ले आती है वैसे ही को देखकर उन्हें अत्यधिक आनन्द हो रहा है तथा उनके अंग-अंग सुख में रंग गया है। जैसे में अपना रूप देखने से दृष्टि अति रुचिकर लगने लगती है, उसी प्रकार उद्धव के नेत्र रूपी दर्प कृष्ण के नेत्रों के दर्शन कर गोपिकाओं को बहुत अच्छा लग रहा है और अपने आपको भाग्यशाल समझती हैं।

2) श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

सूरदास भगवान श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं – गोपिकाओं ने यमु नंदी तट पर श्रीकृष्ण को देख लिया। वे मोर मुकुट पहने हुए हैं। कानों में मकराकृत कुण्डल धा किये हुए हैं। पीले रंग के रेशमी वस्त्र पहने हुए हैं। उनके तन पर चन्दन-लेप है। वे अत शोभायमान हैं। उनके दर्शन मात्र से गोपिकाएँ तृप्त हुईं। हृदय की तपन बुझ गई। वे सुन्दरी प्रेम-मग्न हो गईं। उनका हृदय भर आया। सूरदास कहते हैं कि प्रभु श्रीकृष्ण अन्तर्यामी हैं उ गोपिकाओं के व्रत को पूरा करने के लिए ही पधारे हैं।

3) सूरदास ने माखन चोरी प्रसंग का किस प्रकार वर्णन किया है?

सूरदास ने बालक कृष्ण के 'माखन-चोरी' प्रसंग का वर्णन अत्यंत मनोहर ढंग से प्रस्तु किया है। एक बार माखन चोरी करते हुए कन्हैया गोपिका के हाथ पकड़े गये। गोपिका गुस्से उन्हें कहती है कि मुझे तुमने दिन-रात बहुत सताया। मैं तंग आ चुकी हूँ। मेरा माखन, दूध, दही सब खा लिया है लेकिन अब नहीं चलेगा। तुम्हारे घर से सब माखन, दूध एवं दही मँगाऊँ। कृष्ण कहते हैं कि तेरी कसम मैंने माखन नहीं खाया है। मेरे मित्र सब खाकर चले गए। उ मुख पर माखन लगे देख गोपिका सारा रहस्य समझ जाती है। गोपिका का गुस्सा क्षण भर समाप्त हो जाता है और वह उन्हें गले लगा लेती है।

10.6 ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : [Text Book]

1) ऊधौ हम आजु भईं बड़-भागी।
जिन अँखियन तुम स्याम बिलोके, ते अँखियाँ हम लागीं।
जैसे सुमन बास लै आवत, पवन मधुप अनुरागी।
अति आनंद होत है तैसैं, अंग-अंग सुख रागी।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सूरदास के पद' से लिया ग है, जिसके रचयिता सूरदास जी हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पद में गोपियाँ उद्धव को संबोधित करती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! आज ह स्वयं को बहुत भाग्यशाली मान रहे हैं क्योंकि जो आँखे हमारे प्यारे कृष्ण के दर्शन करके आयीं उन्हीं आँखों के दर्शन हमें मिल गए हैं।

भाव स्पष्टीकरण : सूरदास ने भ्रमर गीत में ब्रज की गोपिकाओं की विरह-व्यथा का बहुत ही मार्मिक ढंग से वर्णन किया है। श्रीकृष्ण कंस को मारने मथुरा गए लेकिन बहुत दिनों तक वापस ब्रज नहीं आये। यहाँ श्रीकृष्ण के बिना गोपिकाएँ बहुत ही उदास थीं। वे कृष्ण की राह देखती थीं। श्रीकृष्ण अपने सखा उद्धव को ब्रज के बारे में जानने के लिए भेजते हैं। उद्धव से गोपिकाएँ कहती हैं – 'आज हम बहुत ही भाग्यशालिनी बन गईं। जिन आँखों से तुमने श्याम को देखा उन आँखों को देखने का सौभाग्य हमें मिल रहा है। जैसे फूल सुगंध ले आता है, हवा प्यारे भौंरे को, वैसे ही हमें श्रीकृष्ण का संदेश मिल गया है। श्रीकृष्ण के बारे में सुनकर बहुत ही आनंद हो रहा है और हमारे अंग-अंग में सुख का अनुभव हो रहा है नहीं तो हमारा विरह-व्यथा से जीना मुश्किल हो जाता।

विशेष : अनुप्रास अलंकार, रूपक अलंकार। ब्रज भाषा।
गोपिकाओं का श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम व्यक्त हुआ है।

2) *जमुना तट देखे नँद नंदन।*
मोर-मुकुट मकराकृत-कुंडल, पीत-बसन तन चंदन।
लोचन तृप्त भए दरसन तैं उर की तपनि बुझानी।
प्रेम-मगन तब भईं सुंदरी, उर गदगद, मुख-बानी।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सूरदास के पद' से लिया गया है, जिसके रचयिता सूरदास ज़ी हैं।

संदर्भ : श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य का वर्णन इस में देखने को मिलता है।

भाव स्पष्टीकरण : ब्रज की नारियों ने जमुना तट पर श्रीकृष्ण को देख लिया। उन्होंने सिर पर मोर-मुकुट, कानों में मकर के आकार का कुण्डल और शरीर पर पीले रंग का रेशमी वस्त्र धारण किया हुआ था। शरीर पर चन्दन लेपन से श्रीकृष्ण अत्यंत शोभायमान लग रहे थे। ऐसे श्रीकृष्ण के शोभायमान रूप के दर्शन कर ब्रज नारी की आँखें तृप्त हो गईं। उनके हृदय का ताप बुझ गया। वे श्रीकृष्ण के प्रेम में डूब गईं। उनका हृदय भर आया और वे उस अलौकिक आनंद का शब्दों में वर्णन न कर सकीं। वाणी मुख में ही रह गई।

विशेष : यहाँ श्रीकृष्ण के अलौकिक रूप-सौन्दर्य का वर्णन हुआ है।
अलंकारः अनुप्रास। भाषाः ब्रज भाषा जो कोमलकान्त पदावली के लिए प्रसिद्ध है।

3) *चोरी करत कान्ह धरि पाए।*
निसि-बासर मोहिं बहुत सतायौ अब हरि अरि हाथहिं आए।
माखन-दधि मेरौ सब खायौ, बहुत अचगरी कीन्ही।
अब तो घात परे हौ लालन, तुम्है भलै मैं चीन्ही।
दोउ भुज पकरि, कहयौ कहँ जैहौ माखन लेउँ मँगाइ।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सूरदास के पद' से लिया गया है, जिसके रचयिता सूरदास जी हैं।

संदर्भ : उपरोक्त पद्यांश में एक ग्वालिन बाल कृष्ण को माखन चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ लेती है और उन पर क्रोध प्रकट करती है।

व्याख्या : सूरदास इस पद में कृष्ण के माखन चोरी पर रूष्ट ग्वालिन के भावों का वर्णन करते हैं। कृष्ण की रोज़-रोज़ की माखन चोरी से एक गोपी बहुत परेशान थी। कई दिनों से इंतजार में थी कि किसी प्रकार कृष्ण को रंगें हाथों पकड़ा जाय। आज कृष्ण पकड़ में आ गए तो गोपी कहने लगी - हे कृष्ण, तुमने रात-दिन मुझे बहुत सताया है, रोज-रोज चोरी करके भाग जाते हो, किसी तरह आज पकड़ में आए हो। मेरा सारा दही मक्खन खा लिया और शरारत अलग से की कि सारे बर्तन फोड़कर चले गए। मैं अब-तक सही चोर को पहचान नहीं पाई थी, पर अब मेरे हाथ लगे हो। मैंने भी इस माखन चोर को भलीभाँति पहचान लिया है। इसके बाद गोपी ने कृष्ण के दोनों हाथ पकड़कर कहा - बोलो, अब कहाँ जाओंगे? कहो तो तुम्हारी माँ से सारा दही-मक्खन मँगवा लूँ, जितना तुमने खाया है।

विशेष : ब्रज भाषा। वर्णनात्मक शैली का उपयोग। 'वात्सल्य' रस।

4) तेरी सौं मैं नेकुँ न खायौ, सखा गये सब खाइ।
मुख तन चितै, बिहँसि हरि दीन्हौ, रिस तब गई बुझाइ।
लियौ स्याम उर लाइ ग्वालिनी, सूरदास बलि जाइ॥

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'सूरदास के पद' पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता सूरदास जी हैं।

संदर्भ : श्रीकृष्ण को ग्वालिन ने माखन चुराते पकड़ लिया है। कन्हैया को पकड़ लेने के बाद वह कहने लगी कि तुमने जितना माखन खाया है, वह यशोदा से मँगवा लूंगी। तब कन्हैया ग्वालिन को उत्तर देते हैं।

व्याख्या : सूरदास ने इस पद में बाल-कृष्ण की क्रीडाओं का मनोहारी चित्रण किया है। ग्वालिन ने चोरी करते हुए कान्ह को पकड़ लिया है। वह उन्हें खूब खरी खोटी सुना रही है। तब बालक कृष्ण बाल सुलभ उत्तर देते हैं, उससे ग्वालिन का गुस्सा शांत हो जाता है।

बालक कृष्ण कहते हैं कि मैं तुम्हारी सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैंने थोड़ा-सा भी माखन नहीं खाया है। मेरे सब मित्रों ने खाया है। यह कहकर गोपाल ने उनके मुँह को देखा और हँस पड़े। उनके हँसते ही उस ग्वालिन का गुस्सा गायब हो गया। सूरदास कहते हैं कि ग्वालिन ने श्याम को हृदय से लगा लिया। सूरदास उनकी इस लीला पर बलि-बलि जाता है।

विशेष : ब्रज भाषा। श्री कृष्ण के माखन चोरी प्रसंग का सुन्दर वर्णन। सूरदास का बाल लीला वर्णन अनुपम है।

आ. आधुनिक कविता

13. अधिकार

– महादेवी वर्मा

: प्रश्नोत्तर :

13.5 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) *मुस्काते फूल को क्या आना चाहिए?*
मुस्कांते फूलों को मुरझाना भी आना चाहिए।

2) *मेघ में किस चीज़ की चाह होनी चाहिए?*
मेघ में घुल जाने की चाह होनी चाहिए।

3) *आँखों की सुंदरता किससे बढ़ती है?*
आँखों की सुंदरता आँसू रूपी मोतियों से बढ़ती है।

4) *प्राणों की सार्थकता किसमें है?*
प्राणों की सार्थकता उसी में है, जिनमें बेसुध पीड़ा सोती।

5) *कवयित्री को किसकी चाह नहीं हैं?*
कवयित्री को अमरों के लोक की चाह नहीं हैं।

6) *कवयित्री किस अधिकार की बात कर रही हैं?*
कवयित्री मिटने के अधिकार की बात कर रही है।

7) *परमात्मा की करुणा से कवयित्री को क्या मिला?*
परमात्मा की करुणा से कवयित्री को मिटने का अधिकार मिला।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

8) *तारों के दीप को क्या भाना चाहिए?*
तारों के दीप को बुझ जाना भाना चाहिए।

9) *ऋतुराज को कौन-सी राह देखनी चाहिए?*
ऋतुराज को जाने की राह देखनी चाहिए।

13.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) *फूल एवं तारों के विषय में कवयित्री महादेवी वर्मा क्या कहती हैं?*

फूल और तारों को बिम्ब के रूप में प्रयोग करते हुए कवयित्री ने इनके माध्यम से जीवन की नश्वरता एवं अस्थिरता पर प्रकाश डाला है। फूल जो खिलकर सबको प्रसन्नचित्त करता है उसे एक दिन मुरझाना भी पड़ता है। जिन फूलों को मुरझाना नहीं आता उन्हें मुस्कुराने का भी हक नहीं है। तारे जो विस्तीर्ण आकाश में टिमटिमाकर रात में अपना प्रकाश फैलाते हैं रात ढलते ही छिप जाना पड़ता है। ऐसे तारे दीपक नहीं बन सकते जो बुझना न जानते हों। जो मनुष्य दुख नहीं सह सकता, उसे सुख की चाह नहीं रखनी चाहिए। सुख और दुख जीवन में आते रहते हैं। उनसे मनुष्य को विचलित नहीं होना चाहिए।

2) बादल एवं वसन्त ऋतु से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

बादलों से तथा वसन्त ऋतु से हमें प्रेरणा मिलती है कि हम स्वर्ग में नीलम की तरह रहने वाले बादल न बने बल्कि जिस प्रकार बादल उमड़-घुमड़कर इस तृप्त धरा को शीतलता प्रदान करते हैं वैसे ही हमें दूसरों की पीड़ा में शामिल होना चाहिए। ऋतुराज वसन्त से यह प्रेरणा मिलती है कि वह जिस प्रकार बार बार नित नूतन बनकर आता है वैसे हमें भी जीवन में नित नये प्रयोग करते रहना चाहिए।

3) जीवन की सार्थकता किसमें है?

महादेवी वर्मा कहती हैं कि जीवन में सुख और दुख दोनों का समान महत्व है। ये जीवन के अभिन्न अंग हैं। जिस तरह मेघ की सार्थकता पिघल कर बरसने में, जग को आनंद देने में है, उसी तरह जीवन की सार्थकता परिस्थितियों का सामना करने में है न कि उनसे पलायन करने में। मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह जीवन को उसकी परिपूर्णता में स्वीकार करे।

4) कवयित्री अमरों के लोक को क्यों ठुकरा देती हैं?

कवयित्री महादेवी वर्मा जी का विश्वास है कि वेदना एवं करुणा उन्हें आनंद की चरमावस्था तक ले जा सकते हैं। उन्होंने वेदना का स्वागत किया है। उनके अनुसार जिस लोक में दुःख नहीं, वेदना नहीं, ऐसे लोक को लेकर क्या होगा? जब तक मनुष्य दुःख न भोगे, अंधकार का अनुभव न करे तब तक उसे सुख एवं प्रकाश के मूल्य का आभास नहीं होगा। जीवन नित्य गतिशील है। अतः इसमें उत्पन्न होनेवाले संदर्भो को रोका नहीं जा सकता। जीवन की महत्ता परिस्थितियों का सामना करने में है, उनसे भागने में नहीं। कवयित्री अमरों के लोक को ठुकराकर अपने मिटने के अधिकार को बचाये रखना चाहती हैं।

5) 'अधिकार' कविता में प्रयुक्त प्राकृतिक तत्वों के बारे में लिखिए।

महादेवी वर्मा छायावादी कवयित्री थीं। प्रकृति वर्णन छायावाद का प्रमुख अंग हैं। 'अधिकार' कविता में भी कवयित्री ने कई प्राकृतिक तत्वों के द्वारा हमें संदेश दिया है। फूल, तारे, मेघ, वसंत ऋतु आदि प्राकृतिक तत्वों द्वारा दुःख एवं वेदना का अनुभव कराया है। नीले मेघों को धुलना चाहिए और वसंत ऋतु के बाद ग्रीष्म ऋतु का आना स्वाभाविक है। उसी तरह मानव जीवन में सुख-दुःख सामान्य है। दुख, वेदना, यातना की अनुभूति कर धैर्य से सामना करना चाहिए।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

6) 'अधिकार' कविता के द्वारा कवयित्री ने क्या संदेश दिया हैं?

महादेवी वर्मा ने वेदना का स्वागत करते हुए कहा है कि जिस लोक में अवसाद नहीं, वेदना नहीं, ऐसे लोक को लेकर क्या होगा? जीवन की सार्थकता परिस्थितियों से डट कर मुकाबला करने में है। फूल, तारे, बादल, वसंत आदि प्रकृति से अनेक बिम्बों का प्रयोग करके कवयित्री ने जीवन के प्रति गहरी आस्था व्यक्त की है। कवयित्री को वेदना का वह रूप प्रिय है जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को समस्त संसार से बाँध देता है। जीवन में वेदना की अनुभूति का महत्व तथा संघर्ष पथ पर निरंतर आगे बढ़ने का संदेश दिया है।

13.7 ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : [Text Book]

1) *ऐसा तेरा लोक, वेदना*
नहीं, नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं–
जिसने जाना मिटने का स्वाद!

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'अधिकार' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसकी रचयिता महादेवी वर्मा हैं।

संदर्भ : यहाँ महादेवी वर्मा अपने अज्ञात प्रियतम से कहती हैं कि जिसमें न तो विरह वेदना है और न ही किसी का दुख है, हे देव यह लोक मुझे नहीं चाहिए। मैं तो इस लोक में अपने वेदनामय जीवन से ही सुखी हूँ।

स्पष्टीकरण : महादेवी वर्मा इन पक्तियों में कहती हैं कि जिस लोक में अवसाद नहीं, वेदना नहीं, ऐसे लोक को लेकर क्या होगा? जो खुद अपने लिए जीता है, उसका जीना भी क्या? जो परिस्थितियों का डटकर सामना करता है, वही असली जीना जीता है। जिसमें आग नहीं, जिसने जलना नहीं जाना, उसका जीना भी क्या? वह तो खुशी से मर-मिटना भी नहीं जानता। जो दुःख का सामना करना जानता है, मर-मिटना जानता है, वही मुसकुराना भी जानता है।

2) *क्या अमरों का लोक मिलेगा?*
तेरी करुणा का उपहार?
रहने दो हे देव! अरे
यह मेरा मिटने का अधिकार!

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'अधिकार' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसकी रचयिता महादेवी वर्मा हैं।

भाव स्पष्टीकरण : आधुनिक मीरा कहलाने वाली महादेवी वर्मा जी वेदना, अवसाद, करुणा, दुःख, यातना, पीड़ा को मानव जीवन के अविभाज्य अंग मानती हैं। वे इन अनुभवों को स्वर्ग सुख से भी ज्यादा महत्वपूर्ण मानती हैं। स्वर्ग लोक में सुख ही सुख है, दुःख का नाम ही सुनाई नहीं देता। दुःख, अवसाद, पीड़ा आदि ये सब मानव की अमूल्य निधियाँ है। तुम्हारे ऐसे स्वर्ग लोक में आकर मैं क्या करूँ? मुझे तो मानव लोक ही मधुर लगता है। हे भगवान! मधुर पीड़ा से मर मिटने का अधिकार मेरे लिए ही छोड़ दो।

3) *वे मुस्काते फूल, नहीं–*
जिनको आता है मुरझाना,
वे तारों के दीप, नहीं–
जिनको भाता है बुझ जाना।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'अधिकार' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसकी रचयिता महादेवी वर्मा हैं।

संदर्भ : महादेवी जी के इस सरस गीत में वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। वे अपने अज्ञात प्रियतम की विरह की पीड़ा पर अपना अधिकार बनाये रखना चाहती है। वे सर्वसुख सम्पन्न लोक की कामना नहीं करतीं। वे सांसारिक जीवन में ही रहने की कामना करती हैं।

व्याख्या : महादेवी वर्मा अपने प्रियतम (परमात्मा) को संबोधित करती हुई कहती हैं कि मैंने सुना है कि तुम्हारे लोक (स्वर्ग) में फूल सदैव खिले रहते हैं उन्होंने कभी मुरझाना नहीं सीखा है, किन्तु मैं तो वे फूल चाहती हूँ जिन्होंने मुरझाना भी सीखा है। पीडा का अपना आनंद है। आपके स्वर्ग लोक में तारों के दीपक हैं जिनको बुझ जाना कभी अच्छा नहीं लगता है, अर्थात् वे सदैव जलते रहते हैं। यादि तुम मुझे अपना लोक प्रदान करो तो मुझे ये दीपक नहीं चाहिए। मुझे तो संघर्षशील मिट्टी के दीपक अच्छे लगते है जो दुःख और सुख से युक्त इस संसार को प्रकाशित करते हैं। मुझे तो दुःखों का साथ ही अच्छा लगता है।

विशेष : मानव जीवन में उत्पन्न वेदना की अनुभूति को प्रतिपादित किया है।
भाषा - शुद्ध हिन्दी खड़ी वोली है।
शैली - भावात्मक गीति शैली है।
रस-छन्द - मुक्तक छंद, गुण-माधुर्य, संपूर्ण पद में पद मैत्री है।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

4) वे सूने से नयन, नहीं–
जिनमें बनते आँसू-मोती;
वह प्राणों की सेज, नहीं–
जिनमें बेसुध पीड़ा सोती;

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'अधिकार' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसकी रचयिता महादेवी वर्मा हैं।

संदर्भ : उपरोक्त पद्यांश में कवयित्री अपने अज्ञान प्रियतम की विरह-पीड़ा पर अधिकार बनाये रखना चाहती हैं। वे सांसारिक जीवन में ही रहने की कामना करती है।

स्पष्टीकरण : महादेवी वर्मा अपने प्रियतम (परमात्मा) को संबोधित करते हुए कहती हैं कि मैंने सुना है आपके स्वर्ग लोक में कभी कोई वियोग में, दुःख में रोता नहीं हैं। उनके आँसुओं से रहित नेत्र बड़े ही सूने-सूने से दिखते हैं। स्वर्ग के निवासियों के नेत्रों से कभी आँसू मोती बनकर नहीं छलकते हैं। वहाँ के लोग विरह-व्यथा से दुःखी होकर सेज पर नहीं सोते अर्थात उन्हें कभी विरहव्यथा नहीं सताती है। इस तरह की सेज जिस पर पीड़ा से व्यथित होकर लोग न सोते हो, उसकी मेरी कोई कामना नहीं है। मुझे तो यह सांसारिक सुख-दुःख ही अच्छे लगते हैं।

विशेष : साहित्यिक हिन्दी। खड़ी बोली का प्रयोग। छायावादी भाव की कविता। वियोग रस का निरूपण।

14. गहने

— कुवेंपु

— अनुवादक : डॉ. एम. विमला

: प्रश्नोत्तर :

14.6 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) बेटी सोने के गहने क्यों नहीं चाहती?

बेटी कहती है कि सोने के गहने तकलीफ देते हैं, अतः नहीं चाहिए।

2) बेटी रंगीन कपड़े पहनने से क्यों इनकार करती है?

रंगीन कपड़े मिट्टी में खेलने नहीं देते।

3) माँ रंगीन कपड़े और गहने पहनने के लिए क्यों आग्रह करती है?

माँ रंगीन कपड़े और गहने पहनने के लिए इसलिए आग्रह करती है कि इससे अति सुंदर लगेगी।

4) बेटी को क्यों सुंदर दिखना है?

देखनेवालों को सुंदर लगता है और माँ को भी आनंद मिलता है। इसलिए बेटी को सुंदर दिखना है।

5) बेटी सजने-धजने से क्या महसूस करती है?

बेटी सजने-धजने से अपने आपको बंधित महसूस करती है।

6) बेटी किन्हें गहने मानती है?

बेटी अपने बचपन को और माँ की ममता (मातृत्व) को ही गहने मानती है।

7) माँ और बेटी एक दूसरे के लिए क्या बनते हैं?

माँ और बेटी एक दूसरे के लिए गहने बनते हैं।

14.7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) बेटी रंगीन कपड़े और गहने क्यों नहीं चाहती?

बेटी रंगीन कपड़ों को ठुकराते हुए अपनी माँ से कहती है कि वे कपड़े उसे मिट्टी में खेलने नहीं देते। वे खेलने के आनंद से वंचित रह जाती है। ये कपड़े दूसरों के लिए भले ही सुंदर दिखाई दें पर मेरे लिए नहीं। सोने के गहने मुझे तकलीफ़ देते हैं। इस तरह ये मुझे बंधन के समान लगते हैं।

2) 'गहने' कविता के द्वारा कवि ने क्या आशय व्यक्त किया है?

कुवेंपु जी ने 'गहने' कविता के द्वारा सरल जीवन का सन्देश दिया है। गहने और सम्पत्ति से ज्यादा रिश्ते-नाते महत्वपूर्ण हैं। यह कविता माँ-बेटी के संवाद के रूप में है। माँ बेटी को रंगीन कपड़े पहनाना चाहती है, गहने पहनाना चाहती है ताकि उसकी बेटी बहुत सुंदर दिखे। मगर बेटी यह कहकर गहनों को ठुकरा देती है कि वे तकलीफ़ देते हैं। रंगीन कपड़ों को मना करती है क्योंकि

वे मिट्टी में खेलने नहीं देते। इन्हें पहनने से देखनेवालों को आनंद होता है लेकिन वह बड़ा बन्धन महसूस करती है। फिर बेटी कहती है – मेरा यह बचपन, तुम्हारा मातृत्व ही मेरे लिए गहने हैं। अन्य गहने क्यों चाहिए?

14.8 ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : [Text Book]

1) *ताकि दिखाई दो सुंदर, बहुत ही सुंदर-यों कहती हो*
सुंदर लगे किसको, कहो माँ?
देखनेवालों को लगता है सुंदर, देता है आनंद;
मगर मुझे बनता है बड़ा बंधन!

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गहने' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुवेंपू हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में उन्होंने गहने से अधिक माँ और बेटी के रिश्ते को महत्व दिया है।

भाव स्पष्टीकरण : माँ अपनी बेटी से सोने के गहने और रंगीन कपड़े पहनने के लिए कहती है। बेटी ऐसा करने से मना करती है क्योंकि सोने के गहने तकलीफ़ देते हैं और रंगीन कपड़े उसे मिट्टी में खेलने नहीं देते। वह कहती है कि देखनेवाले को भले ही आनंद दे लेकिन मुझे बड़ा बंधन लगता है।

विशेष : सरल भाषा, माँ और बेटी का मधुर संबंध।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

2) *मेरा यह बचपन, तुम्हारा मातृत्व*
ये ही गहने हैं मेरे लिए, माँ;
मैं तुम्हारा गहना; तुम मेरा गहना;
फिर अन्य गहने क्यों चाहिए, माँ?

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गहने' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुवेंपू हैं।

संदर्भ : कुवेंपु जी आपसी रिश्तों में प्रेम को, गहनों से भी कई ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं। वे कहना चाहते है की भौतिक पदार्थ (सोना, आभूषण वगैरह) माँ की ममता और पुत्री के स्नेह के आगे कुछ भी महत्व नहीं रखते।

भाव स्पष्टीकरण : बेटी माँ से गहनों की व्यर्थता के बारें में कह रही है। वह कहती है कि मेरा यह प्यारा बचपन जिसमें तुमने मुझे खूब प्यार और स्नेह दिया है, मेरे लिए मेरा यह बचपन गहने से भी बढ़कर है। तुम्हारा मातृत्व सुख दुनिया का सबसे बड़ा सुख है। हमारा यह सुख (मेरा बचपन का और तुम्हारा मातृत्व का) सबसे बड़ा सुख है। इस सुख की प्राप्ति धन से या आभूषणों से नहीं की जा सकती। माँ! जब हमारे पास इतनी बड़ी संपत्ति है तब फिर अन्य संपत्ति या गहने क्यों चाहिए? इस प्रकार कुवेंपु जी माँ-बेटी के बचपन और मातृत्व के सुख को सब सुखों से बढ़कर बताते हैं।

विशेष : कन्नड़ से अनुवादित कविता है।

15. कायर मत बन

– नरेन्द्र शर्मा

: प्रश्नोत्तर :

15.5 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : **[Text Book]**

1) *कवि नरेन्द्र शर्मा क्या न बनने का संदेश देते हैं?*

कवि नरेन्द्र शर्मा कायर न बनने का सन्देश देते हैं।

2) *कौन राह रोकता है?*
पाहन (पत्थर) राह रोकता है।

3) *कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार मनुष्य को किसने सींचा है?*
कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार मनुष्य को मानवता ने सींचा है।

4) *कवि नरेन्द्र शर्मा मनुष्य को किसके बल पर जीतने को कहते हैं?*
कवि नरेन्द्र शर्मा कहते हैं कि या तो प्रीति के बल पर जीत, या दुश्मन तेरा पैर स्वयं चूमे, ऐसी जीत हासिल कर।

5) *कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार प्रतिहिंसा क्या है?*
कवि के अनुसार प्रतिहिंसा दुर्बलता है।

6) *कवि नरेन्द्र शर्मा ने किसे अधिक अपावन कहा है?*
कवि की दृष्टि में कायरता अधिक अपावन है।

7) *कवि नरेन्द्र शर्मा किसके सामने आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं?*
कवि नरेन्द्र शर्मा दुष्ट के सामने आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

8) *कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार मनुष्य को कैसे नहीं जीना चाहिए?*
कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार मनुष्य को कायरतापूर्वक नहीं जीना चाहिए।

9) *मानवता ने मनुष्य को कैसे सींचा है?*
मानवता ने मनुष्य को खून पसीना बहाकर सींचा है।

10) *युद्ध के समय क्या नहीं करना चाहिए?*
युद्ध के समय हमें पीठ नहीं फेरना चाहिए।

11) *कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार मनुष्य के अंदर का मानव कैसा है?*
कवि नरेन्द्र शर्मा के अनुसार मनुष्य के अन्दर का मानव अमोल है।

12) *कवि नरेन्द्र शर्मा क्या अर्पण करने के लिए कहते हैं?*
कवि नरेन्द्र शर्मा सर्वस्व अर्पण करने के लिए कहते हैं।

15.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) *'कायर मत बन' कविता के द्वारा कवि हमें क्या संदेश देते हैं?*

'कायर मत बन' कविता में कवि नरेन्द्र शर्मा हमें संदेश देते हैं कि कुछ भी बन, बस कायर मत बन। मानवता को कभी मत छोड़ना। मूर्ख वैरी जब ललकारता है तो उसे पीठ मत दिखाना, उसके सामने कभी घुटने मत टेकना। प्यार से समझाने का प्रयत्न करो, जब न सुने तो उसे सबक सिखा दो। कायरता प्रतिहिंसा से भी अधिक अपावन है। दुष्ट के सामने आत्मसमर्पण नहीं करना चाहिए। मानवता को ज्यादा महत्व देते हुए कायरता को छोड़कर, धैर्य और साहस से जिन्दगी में आगे बढ़ना चाहिए।

2) *कवि नरेन्द्र शर्मा ने प्रतिहिंसा और कायरता के संबंध में क्या कहा है?*

कवि नरेन्द्र शर्मा ने 'कायर मत बन' कविता से हमें यह संदेश दिया है कि कुछ भी बन बस कायर मत बन। तुम कब तक दुःख के आँसू पीते रहोगे? धैर्य से जिन्दगी में बाधाओं पर जीत हासिल करो। प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है पर कायरता उससे अधिक अपावन है। हिंसा के प्रति हिंसा करना मनुष्य की दुर्बलता है तो कायरता भी अधिक अपवित्र है। कभी दुष्टों के आगे आत्मसमर्पण मत करना। तुम्हें किसी से भी डरने की आवश्यकता नहीं है। कायरता को छोड़कर, धैर्य और साहस से जिन्दगी में आगे बढ़ना चाहिए।

3) *मानवता के प्रति कवि नरेन्द्र शर्मा के विचार प्रकट कीजिए।*

कवि नरेन्द्र शर्मा ने 'कायर मत बन' कविता में मानव को कायर नहीं बनने का संदेश दिया है। कवि मानवता को अत्यधिक महत्व देते हुए दुष्टों के सम्मुख आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं। युगों तक खून-पसीना बहाकर, अत्यधिक परिश्रम से मानवता रूपी वृक्ष को जो निर्माण किया है, उसके तले आराम से जीना चाहिए। यदि कोई मूर्ख 'युद्धम् देहि' कहे तो उसका मुँह तोड़ जवाब देना चाहिए। या तो प्यार के बल पर से उसे जीतना चाहिए नहीं तो उसे सबक सिखाना चाहिए क्योंकि 'मानव' अमोल है। ले-दे कर जीना, जीना नहीं है। धैर्य और साहस से दुष्टों का विनाश करके प्रजा की रक्षा करनी चाहिए। व्यक्तिगत तौर पर भी हमेशा गम के आँसू पीते कब तक हम रह सकते हैं? साहस से कष्टों का सामना कर मानवता के पथ पर निरंतर आगे बढ़ना चाहिए।

15.7 ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : [Text Book]

1) *ले-देकर जीना क्या जीना?*
कब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून-पसीना।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कायर मत बन' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता नरेन्द्र शर्मा हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने मनुष्य को कायर न बनने का संदेश देते हुए कहा है कि मनुष्य को मनुष्यता का ध्यान भी रखना अवश्यक है।

भाव स्पष्टीकरण : कवि इसमें मानवता को अत्यधिक महत्व देते हुए दुष्टों के सम्मुख आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं। हमेशा समझौता करके, हार के, ले-देकर जीना, जीना नहीं है। कब तक तुम दुःख के आँसू पीते हुए, कष्ट सहते ही रहोगे? मानवता ने तुमको अमृत जल से सींचा है। तुम्हें सुख भोगने का अधिकार है। इसलिए शत्रुओं से डटकर मुकाबला करो, कायरता छोड़ दो, साहसी बनो।

2) *युद्धं देहि कहे जब पामर*
दे न दुहाई पीठ फेर कर;

या तो जीत प्रीति के बल पर
या तेरा पद चूमे तस्कर।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कायर मत बन' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता नरेन्द्र शर्मा हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने मनुष्य को कायर न बनने का संदेश देते हुए कहा है कि मनुष्य को मनुष्यता का ध्यान भी रखना अवश्यक है।

स्पष्टीकरण : कवि कह रहे हैं - हे मनुष्य! तुम कुछ भी बनो बस कायर मत बनो। अगर कोई दुष्ट या क्रूर व्यक्ति तुमसे टक्कर लेने खड़ा हो जाए, तो उसकी ताकत से डरकर तू पीछे मत हटना। पीठ दिखाकर भाग न जाना। संसार में कई ऐसे महापुरुष जन्मे हैं, जिन्होंने प्यार और सेवाभाव से दुष्टों के दिल को भी जीत लिया या पिघलाया है। क्योंकि हिंसा का जवाब प्रतिहिंसा से देना नहीं। प्रतिहिंसा भी दुर्बलता ही है, लेकिन कायरता तो उससे भी अधिक अपवित्र है। इसलिए हे मानव! तुम कुछ भी बनो लेकिन कायर मत बनो।

3) *कुछ भी बन बस कायर मत बन।*
ठोकर मार पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन।
कुछ भी बन बस कायर मत बन॥

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के आधुनिक कविता 'कायर मत बन' से लिया गया है जिसके रचयिता नरेन्द्र शर्मा हैं।

संदर्भ : कवि मनुष्य को कायर न बनने का संदेश एवं मानवता को अत्यधिक महत्व देते हुए दुष्टों के सम्मुख आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं।

व्याख्या : प्रस्तुत पद्यांश में कवि मनुष्य को संबोधित करते हुएं कहते हैं कि हे मानव तुम सब कुछ बनो किन्तु डरपोक या कायर मंत बनो। मार्ग में यदि पत्थर भी तुम्हारे मार्ग को रोकते हैं, तो ठोकर मार कर उन्हें वहाँ से हटा दो, किन्तु उनके सामने तुम झुको नहीं। माथा पटकना अर्थात् जीवन में आनेवाली कठिनाइयों से निराश होना व्यर्थ हैं।

विशेष : *भाषा* - शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली। *भाव* - सरल, सरस एवं प्रवाहमय।

4) *तेरी रक्षा का न मोल है,*
पर तेरा मानव अमोल है,
यह मिटता है, वह बनता है,
यही सत्य की सही तोल है

प्रसंग : इस कवितांश को हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कायर मत बन' पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता नरेन्द्र शर्मा जी हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत कविता में कवि मनुष्य को कायर न बनने का संदेश दे रहे हैं।

व्याख्या : कवि कह रहे हैं कि हे मनुष्य! तेरी रक्षा हो, इसका कोई मूल्य नहीं है। पर यह भी कटु सत्य है कि मानवता भी एक बहुमूल्य वस्तु है। यदि मनुष्य मानवता की रक्षा के लिए

अपने को मिटा देता हैं, तभी मनुष्यता की, मानव जाति की रक्षा हो पाती है। सत्य का यही मानदंड है। अर्थात् जीवन अमूल्य है। इस पर कोई प्रश्न नहीं है लेकिन व्यक्ति जीवन से ज्यादा बहुमूल्य मानव जीवन है। मनुष्यता, मानव जीवन चलता रहता है। अगर मानव जीवन ही नष्ट हो गया तो मनुष्य भी कहाँ बचेगा। इसलिए मनुष्य को बलिदान के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

विशेष : खड़ी बोली का प्रयोग। प्रेरणादायक कविता।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

5) यह मिटता है, वह बनता है,
यही सत्य की सही तोल है,
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्मसमर्पण,
कुछ भी बन बस कायर मत बन।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के आधुनिक कविता 'कायर मत बन' से लिया गया है जिसके रचयिता नरेन्द्र शर्मा हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत कविता में कवि ने मनुष्य को कायर न बनने का संदेश दिया है। कवि मानवता को अत्यधिक महत्त्व देते हुए दुष्टों के सामने हार नहीं मानने के लिए कहते हैं।

स्पष्टीकरण : कवि कहते हैं कि जब दुश्मन युद्ध के लिए ललकारे तब उसका वीरता से सामना करना चाहिए। कायरता सबसे बड़ी अपवित्र चीज़ है। इसलिए धैर्य और वीरता के साथ दुष्टों को पराजित करना चाहिए। तुम मानवता की रक्षा के लिए अपने को मिटा दो। तुम्हारा जीवन कीमती है लेकिन मानवता की रक्षा ज्यादा जरूरी है। मानवता अनमोल है। यही सत्य है। इसलिए दुष्ट के सामने आत्म समर्पण नहीं करके अपना तन-मन-धन मनुष्यता के लिए अर्पित कर दो। स्वयं को मानवता की रक्षा के लिए बलिदान भी होना पड़े तब बलिदान भी देना चाहिए। यही सत्य है। अगर दुष्टों का राज हो गया तो संपूर्ण मानवता खतरे में पड़ जाएगी।

विशेष : भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली के साथ-साथ ओजपूर्ण है।

16. एक वृक्ष की हत्या

– कुँवर नारायण

: प्रश्नोत्तर :

16.5 एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : **[Text Book]**

1) ***कवि ने बूढ़ा चौकीदार किसे कहा है?***
कवि ने अपने घर के सामने वाले पेड़ को बूढ़ा चौकीदार कहा है।

2) ***वृक्ष का शरीर किससे बना है?***
वृक्ष का शरीर पुराने चमड़े से बना हुआ है।

3) ***सूखी डाल कैसी है?***
सूखी डाल राइफिल-सी है।

4) ***वृक्ष की पगड़ी कैसी है?***
वृक्ष की पगड़ी फूल और पत्तीदार है।

5) *देश को किससे बचाना है?*
देश को दुश्मनों से बचाना है।

6) *हवा को क्या हो जाने से बचाना है?*
हवा को धुआँ हो जाने से बचाना है।

7) *जंगल को क्या हो जाने से बचाना है?*
जंगल को मरुथल (रेगिस्तान) होने से बचाना है।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

8) *अबकी कौन घर लौटा?*
अबकी कवि (कुँवर नारायण) घर लौटे।

9) *वृक्ष का जूता कैसा है?*
वृक्ष का जूता फटा-पुराना है।

10) *अभी भी किसमें अक्खड़पन दिखाई देता है?*
बूढ़े चौकीदार वृक्ष में अभी भी अक्खड़पन दिखाई देता है।

11) *वृक्ष की वर्दी किस रंग की है?*
वृक्ष की वर्दी खाकी रंग की है।

12) *दूर से ही वृक्ष कैसे ललकारता है?*
दूर से वृक्ष हमेशा चौकन्ना होकर ललकारता है।

13) *वृक्ष की ललकार सुन कवि क्या जवाब देते हैं?*
मैं तुम्हारा दोस्त हूँ।

14) *पल भर में कवि कहाँ बैठ जाते हैं?*
पल भर में कवि पेड़ की ठंडी छाँव में बैठ जाते हैं।

15) *शुरु से ही क्या अंदेशा था?*
शुरु से ही अंदेशा था कि कहीं एक जानी दुश्मन है।

16) *घर को किससे बचाना है?*
घर को लुटेरों से बचाना है।

17) *शहर को किससे बचाना है?*
शहर को नादिरों से बचाना है।

18) *नदियों को क्या हो जाने से बचाना हैं?*
नदियों को 'नाला' हो जाने से बचाना है।

19) *खाने को क्या हो जाने से बचाना है?*
खाने को जहर हो जाने से बचाना है।

20) *मनुष्य को क्या हो जाने से बचाना है?*
मनुष्य को जंगल हो जाने से बचाना है।

16.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) वृक्ष न दिखने पर कवि उसकी यादों में कैसे खो गये?

कवि कुँवर नारायण जी अबकी बार घर लौटे तो देखा कि वह बूढ़ा चौकीदार वृक्ष घर के दरवाजे पर नहीं है। वे बहुत उदास हो जाते हैं, उसकी यादों में खो जाते हैं। उसका शरीर पुराने चमड़े का बना था। वह बहुत ही मजबूत था। झुर्रियोंदार खुरदरा उसका तन मैला कुचैला था। उसकी एक सूखी डाली राइफिल सी थीं। फूल-पत्तीदार पगड़ी धारण किया वह वृक्ष बहुत ही सालों से स्थिर मजबूत ढंग से खड़ा था। धूप में, बारिश में, गर्मी में, सर्दी में अर्थात् सभी मौसमों में हमेशा चौकन्ना होकर घर की रखवाली करता था। कवि और उसके बीच एक प्रकार से दोस्ती हो गयी थी। उसकी ठंडी छाया में कुछ पल बैठकर ही कवि घर के अंदर प्रवेश करते थे।

2) वृक्ष की महत्ता पर प्रकाश डालिए।

'एक वृक्ष की हत्या' कविता में कुँवर नारायण जी वृक्षों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए वृक्षों के महत्व को समझाते हैं। वृक्ष धूप में, बारिश में, गर्मी में, सर्दी में हमेशा चौकन्ना रह कर चौकीदार के समान मानव की रक्षा करता है। वृक्ष मानव का दोस्त है। थके-माँदे मानव को वृक्ष शान्ति एवं ठंडक पहुँचाता है। वृक्षों की संख्या घट गयी तो बारिश नहीं होगी। जंगल मरुभूमि बन कर निर्जन हो जाएगा। इसलिए पेड़ों की रक्षा कर मानव को बचाना है।

3) पर्यावरण के संरक्षण के संबंध में कवि कुँवर नारायण के विचार लिखिए।

वृक्षों के महत्व का वर्णन करते हुए पर्यावरण के संरक्षण के संबंध में कुँवर नारायण जी कहते हैं कि वृक्ष हर मौसम में मानव का हमदर्द बन कर उसकी भलाई करता है। हम जानते हैं कि मनुष्य को जीने के लिए जो हवा और पानी की आवश्यकता है, वे वृक्षों के कारण ही प्राप्य है। पर्यावरण में प्राणवायु वृक्षों के द्वारा ही बढ़ती है जिससे मानव आराम से साँस ले सके। वृक्ष गर्मियों में छत्र छाया बन कर हमारी थकावट दूर करते हैं। वृक्षों से ही बारिश होती है। वृक्षों को काटना नहीं चाहिए। वृक्षों के बिना हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। इसके बिना मनुष्य का जीना दूभर हो जाएगा इसलिए पर्यावरण का संरक्षण बहुत ही आवश्यक है।

16.7 ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : [Text Book]

1) अबकी घर लौटा तो देखा वह नहीं था -
वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
जो हमेशा मिलता था घर के दरवाजे पर तैनात।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक वृक्ष की हत्या' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुँवर नारायण हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने उस वृक्ष को हमेशा दोस्त के रूप में माना था जिसके कट जाने पर उसकी यादें कवि को बार-बार सताती है। वह हमेशा दरवाजे पर बूढ़ें चौकीदार की तरह तैनात रहता था।

भाव स्पष्टीकरण : कवि कई दिनों बाद घर लौटा तो देखा कि उसके घर के निकट जो पेड़ हुआ करता था वह कट गया है। वह पेड़ जिसके इर्द-गिर्द उसका बचपन बीता, कहीं नहीं था। वह पेड़ बूढ़ा हो गया था पर ठाठ उसकी हमेशा रहती थी। वह एक बूढ़े चौकीदार सा नियुक्त उसके घर की रखवाली करता था।

2) *दरअसल शुरू से ही था हमारे अंदेशों में*
कहीं एक जानी दुश्मन
कि घर को बचाना है लुटेरों से
शहर को बचाना है नादिरों से
देश को बचाना है, देश के दुश्मनों से।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक वृक्ष की हत्या' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुँवर नारायण हैं।

संदर्भ : इस कविता में कवि ने वृक्षों के प्रति अपनी संवेदना जताई है।

भाव स्पष्टीकरण : बचपन से ही अपने घर पर तैनात चौकीदार वृक्ष न दिखने पर कवि उदास हो जाते हैं और उसकी याद में खो जाते है। कवि और उस वृक्ष का एक रिश्ता बना हुआ था। दोस्ती हो गयी थी। धूप में, गर्मी में, बारिश में, सर्दी में हमेशा चौकन्ना, छायादार पेड़ के कट जाने पर कवि का क्षोभ बढ़ जाता है।

वृक्षों के महत्व को समझाते हुए कवि कहते हैं - ऐसे जानी दुश्मनों से, नादिरों से, लुटेरों से, घर को, शहर को, देश को बचाना है। कवि ने स्वार्थी मनुष्य को धिक्कारा है।

3) *पुराने चमड़े का बना उसका शरीर*
वही सख्त जान
झुर्रियोंदार खुरदुरा तना मैलाकुचैला,
राइफिल-सी एक सूखी डाल,
एक पगड़ी फूल पत्तीदार,
पाँवों में फटापुराना जूता
चरमराता लेकिन अक्खड़ बल बूता।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक वृक्ष की हत्या' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुँवर नारायण हैं।

भाव स्पष्टीकरण : कवि अब की बार जब घर लौटे तो देखा घर के दरवाजे पर तैनात पुराना वृक्ष नहीं था। उसे स्मरण करते हुए कवि कहते हैं कि बूढ़ा वृक्ष जो चौकीदार जैसा लगता था, हमेशा मेरे दरवाजे पर तैनात रहता था। उसका शरीर बूढ़ा हो चला था लेकिन सख्त जान, कई मौसमों से वह गुज़र चुका था। झुर्रियोंदार, खुरदुरा और मैला कुचैला लगता था। उसकी एक सूखी डाल राइफिल सी लगती थी। वृक्ष के ऊपर फैली फूल-पत्तियाँ उसकी पगड़ी जैसी दिख रही थी। उसके पाँव में फटे पुराने चरमराते हुए जूते थे। वह वृक्ष अक्खड़ता के बल बूते मजबूत खड़ा था - छाया देते हुए; स्वच्छ हवा देते हुए लेकिन ऐसा वृक्ष कट गया था। इस तरह कवि ने उस वृक्ष का विस्तार से वर्णन किया है।

4) *धूप में, बारिश में,*
गर्मी में, सर्दी में,
हमेशा चौकन्ना

अपनी ख़ाकी वर्दी में।
दूर से ही ललकारता, 'कौन?'
मैं जवाब देता, 'दोस्त!'

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक वृक्ष की हत्या' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुँवर नारायण हैं। अपने घर के दरवाजे पर तैनात वृक्ष के कट जाने पर कवि उसकी यादों में खो जाते हैं।

भाव स्पष्टीकरण : कवि वृक्ष को चौकीदार की संज्ञा देते हैं। हर मौसम में जैसे धूप में, बारिश में, गर्मी में, सर्दी में हमेशा वह पेड़ चौकन्ना होकर खाकी वर्दी धारण कर हमारी रक्षा करता रहता था। कवि और वृक्ष में दोस्ती हो गई थी। वे वृक्षों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं। यदि वृक्षों के महत्व को हम नहीं समझेंगे और वृक्षों को इसी तरह काटते रहेंगे तो आगे आनेवाले दिनों में बहुत ही संकट झेलने पड़ेंगे।

5) बचाना है –
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुँआ हो जाने से
खाने को ज़हर हो जाने से
बचाना है - जंगल को, मरुथल हो जाने से
बचाना है - मनुष्य को जंगल हो जाने से।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक वृक्ष की हत्या' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुँवर नारायण हैं।

संदर्भ : अपने घर के दरवाजे पर तैनात वृक्ष के कट जाने पर कवि उसकी यादों में खो जाते हैं, और साथ ही साथ पर्यावरण के विनाश के प्रति मनुष्य को सचेत भी करते हैं।

भाव स्पष्टीकरण : कवि वृक्ष के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं। यदि वृक्ष के महत्व को हम नहीं समझेंगे और वृक्षों को इसी तरह काटते रहेंगे तो आगे आने वाले दिनों में बहुत संकट झेलने पड़ेंगे। इसकी शुरुआत हो चुकी है। भू ताप लगातार बढ़ रहा है, मौसम में बदलाव आ रहा हैं, और जल संकट लगातार बढ़ रहा है। साफ ऑक्सीजन नहीं मिलने के कारण सैकड़ों बीमारियाँ फैल रही हैं। अगर हम अब भी पर्यावरण के संरक्षण के लिए सजग नहीं होते हैं तो यह संकट और अधिक विनाशकारी होता जाऐगा। इसलिए हमें नदियों को अगर नाले में बदलने से बचाना है तो हमें अच्छी बारिश के लिए वृक्षों को बचाना है। अगर वृक्ष नहीं होंगे तो ऑक्सीजन की जगह सिर्फ धुँआ ही बचेगा। हमें खाने पीने की चीजों को प्रदूषित होने से बचाना है। उपजाऊ जमीन को रेगिस्तान में तबदील होने से बचाने के लिए जंगलों को बचाना है। और सिर्फ नदी, हवा, जंगल ही नहीं बल्कि मनुष्यता को भी बचाना है।

विशेष : पर्यावरण के प्रति कवि की संवेदना व्यक्त हुई है।
भाषा शैली - साहित्यिक हिन्दी खड़ी बोली।

तृतीय सोपान

अपठित भाग (एकांकियाँ)

: प्रश्नोत्तर :

19.5 <u>एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]</u>

1) *मिश्रानी को किसने काम से हटा दिया?*
मिश्रानी को छोटी बहू बेला ने काम से हटा दिया।

2) *मिश्रानी कितने वर्षों से मूलराज के परिवार में काम कर रही थी?*
मिश्रानी दस वर्षों से मूलराज के घर में काम कर रही थी।

3) *नौकरों से काम लेने के लिए क्या होनी चाहिए?*
नौकरों से काम लेने की तमीज (या ढंग) होनी चाहिए।

4) *हँसी के मारे मर जाने की बात कौन कहती है?*
हँसी के मारे मर जाने की बात मँझली बहू कहती है।

5) *हर बात पर अपने मायके की तारीफ कौन करती रहती है?*
हर बात पर छोटी बहू बेला अपने मायके की तारीफ करती रहती है।

6) *दादा जी का छोटा पोता परेश किस पद पर था?*
दादाजी का छोटा पोता परेश नायब तहसीलदार पद पर था।

7) *मलमल के थान और अबरों को परेश किसके पास नहीं ले कर जाते?*
मलमल के थान और अबरों को परेश अपने दादा जी के पास नहीं ले जाता।

8) *मूलराज के मँझले बेटे का नाम लिखिए।*
मूलराज के मँझले बेटे का नाम कर्मचन्द है।

9) *दादा जी के अनुसार उनका परिवार किस पेड़ के समान है?*
दादाजी के अनुसार उनका परिवार बरगद के पेड़ वट वृक्ष के समान है।

10) *हल्की सी खरोंच भी दवा न लगने पर क्या बन जाती है?*
हल्की सी खरोंच भी दवा न लगने पर नासूर बन जाती है।

11) *छोटी बहू के मन में किसकी मात्रा जरूरत से ज्यादा है?*
छोटी बहू के मन में दर्प की मात्रा जरूरत से कुछ ज्यादा है।

12) *घृणा को किससे नहीं मिटाया जा सकता?*
घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता।

13) *बरगद का पेड़ किन लोगों ने उखाड़ दिया?*
मल्लू और जगदीश ने बरगद (वट-वृक्ष) का पेड़ उखाड़ दिया।

14) *दादा जी ने परेश से छोटी बहू को कहाँ ले जाने के लिए कहा?*
दादाजी ने परेश से छोटी बहू को बाजार ले जाने के लिए कहा।

15) *किसे दूसरों का हस्तक्षेप और आलोचना पसंद नहीं है?*
परेश की पत्नी बेला को दूसरों का हस्तक्षेप पसंद नहीं है।

16) *व्यक्ति किन गुणों से बड़ा होता है?*
व्यक्ति बुद्धि और योग्यता जैसे गुणों से बड़ा होता है।

17) *पेड़ की छाया को बढ़ानें का काम कौन करती है?*
पेड़ की छाया को बढ़ाने का काम पेड़ की डालियाँ करती हैं।

18) *दादा जी को किस कल्पना से सिहरन होने लगती है?*
पेड़ से अलग होने वाली डाली की कल्पना से दादाजी को सिहरन होने लगती है।

19) *बरगद के पेड़ की कहानी किनका निर्माण करती हैं?*
बरगद के पेड़ की कहानी कुटुम्ब, समाज और राष्ट्र का निर्माण करती है।

20) *दादा जी किसके हक में हैं?*
दादा जी पुराने नौकरों के हक में हैं।

21) *किसने सारी-की-सारी छत फावड़े से खोद डाली?*
मालवी ने सारी की सारी छत फावड़े से खोद डाली।

22) *बंसीलाल का लड़का गली के सिरे पर क्या कर रहा था?*
बंसीलाल का लड़का गली के सिरे पर खड़ा खम ठोंक रहा था।

23) *बेला के अनुसार परिवार की सदस्या उससे किस प्रकार डरती हैं?*
बेला के अनुसार परिवार के सभी सदस्या उससे ऐसा डरते हैं, जैसे मुर्गी के बच्चे बाज से।

24) *दादा जी ने सबको क्या समझाया था?*
दादाजी ने समझाया था कि सबको आपका आदर करना चाहिए।

25) *'सूखी डाली' के एकांकीकार का नाम लिखिए।*
'सूखी डाली' के एकांकीकार हैं उपेन्द्रनाथ अश्क।

19.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) *इन्दु को अपनी भाभी बेला पर क्यों क्रोध आया?*

इन्दु को अपनी भाभी बेला पर क्रोध इसलिए आया क्योंकि उसने घर की पुरानी नौकरानी रजवा को काम से निकाल दिया था। बेला बात-बात पर अपने मायके के बारे में बड़ी ऊँची बातें और प्रशंसा अधिक करती थी। हर बात पर अपने घर की बड़ाई करती थी। उसे अपने ससुराल की कोई भी चीज़ पसंद नहीं आती थी। यहाँ के लोगों का खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना कुछ भी पसंद न आता था। इस बात से इन्दू को अपनी भाभी बेला पर क्रोध आया।

2) रजवा ने छोटी भाभी से क्या कहा?

रजवा मूलराज के परिवार में दस वर्षों से काम कर रही थी। छोटी बहू बेला नें उसे काम से हटा दिया। उदास होकर वह छोटी भाभी के पास जाकर शिकायत करते हुए कहती है – "माँ जी, आज उन्होंनें मुझे काम से हटा दिया। मैं इतने बरस से आप लोगों की सेवा कर रही हूँ। आज तक कभी किसी ने इस प्रकार अनादर नहीं किया था। आप तो मुझे अपने पास ही रखिए। मैं आज से उनका काम करने नहीं जाऊँगी।"

3) बेला ने सारा फर्नीचर और सामान कहाँ रख दिया और क्यों?

बेला ने सारा सामान और फर्नीचर अपने कमरे से निकालकर बाहर कर दिया था। वह अपने पति परेश से कहती है कि मैं इन टूटे-फूटे फर्नीचर को अपने कमरे में नहीं रहने दूँगी। परेश के बहुत कहने पर भी वह उसकी बातों को नहीं मानती है। वह आधुनिक विचारों की महिला है। इस वजह से उसके ख्याल परेश से नहीं मिलते। वह बात-बात पर अपने मैके की तारीफ करती है। वहाँ की चीजें ससुराल की तुलना में अच्छी हैं। इस बेडौल फर्नीचर से तो नीचे धरती पर चटाई बिछा कर बैठना-लेटना अच्छा है।

4) कर्मचन्द ने पेड़ से एक डाली टूटकर अलग होने की बात क्यों कही?

कर्मचन्द दादाजी का मँझला लड़का था। वह उनके पास बैठा पाँव दबा रहा था। बच्चे आँगन में बरगद की पूरी डाल लाकर लगा रहे थे और उसे पानी दे रहे थे। दादाजी कहते हैं कि बच्चे नहीं जानते कि पेड़ से टूटी डाली जल देने से नहीं पनपती। एक बार पेड़ से जो डाली टूट गई, उसे लाख पानी दो, उसमें वह सरसता न आएगी। हमारा यह परिवार बरगद के पेड़ के समान है। इसे सुनकर कर्मचन्द कहता है शायद अब इस पेड़ से एक डाली टूट कर अलग हो जाए। दादाजी के पूछने पर कर्मचन्द कहता है कि छोटी बहू अलग होना चाहती है। उसके मन में दर्प की मात्रा कुछ ज्यादा है। मैंने जो मलमल के थान और रजाई के अबरे लाकर दिये थे वे उसे पसंद नहीं आये। वह अपने मायके के घराने को इस घराने से बड़ा समझती है और घृणा की दृष्टि से देखती है।

5) दादा जी के 'बड़प्पन' के संबंध में क्या विचार थे?

दादा जी बड़प्पन के संबंध में अपने मंझले लड़के कर्मचन्द से कहते हैं कि – बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं है। बड़प्पन तो मन का होना चाहिए। घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। छोटी बहू तभी अलग होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जाएगी। यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिले तो उसकी सारी घृणा धुँधली पड़कर लुप्त हो जाएगी। महानता किसी से मनवाई नहीं जा सकती, अपने व्यवहार से अनुभव कराई जा सकती है। ठूँठ वृक्ष आकाश को छूने पर भी अपनी महानता का सिक्का हमारे दिलों पर उस समय तक नहीं बैठा सकता, जब तक अपनी शाखाओं में वह ऐसे पत्ते नहीं लाता, जिनकी शीतल-सुखद छाया मन के सारे ताप को हर ले और जिसके फूलों की भीनी-भीनी सुगंध हमारे प्राणों में पुलक भर दे।

6) बेला की मानसिक दशा का वर्णन कीजिए।

बेला एक उच्च परिवार से आयी थी। वह नए ख्यालों की पढ़ी-लिखी आधुनिक महिला थी। वह ससुराल में आने के बाद अपने को उसके अनुसार ढ़ाल नहीं पा रही थी। परिवार के सभी लोग उसकी निंदा करते थे। वह इसकी शिकायत अपने पति परेश से करती है। उसे ऐसा महसूस होता है कि वह पराये घर में आ गई है। उसे किसी का हस्तक्षेप, दूसरों की आलोचना पसंद नहीं है। वह अपनी गृहस्थी अलग बसाना चाहती है, जहाँ उसे कोई रोकनेवाला न हो, जहाँ वह सुख और शांति से रह सके। बेला की मानसिक दशा इस तरह थी।

7) दादा जी ने परेश को किस प्रकार मनाया?

परेश ने दादा जी से कहा कि बेला अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती है। उसका इस घर में मन नहीं लगता। अगर आप बाग वाले मकान का प्रबंध कर दें ..... जहाँ वह स्वेच्छापूर्वक जीवन बिता सके। दादा जी कहते हैं कि ये उनके जीते जी असंभव है। तुम चिंता न करो। मैं सबको समझा दूँगा - घर में किसी को तुम्हारी पत्नी का तिरस्कार करने का साहस न होगा। कोई उसका समय नष्ट न करेगा। ईश्वर की असीम कृपा से हमारे घर सुशिक्षित, सुसंस्कृत बहू आई है तो क्या हम अपनी मूर्खता से उसे परेशान कर देंगे? तुम जाओ बेटा, किसी प्रकार की चिंता को मन में स्थान न दो। मैं कोई-न-कोई उपाय ढूँढ निकालूँगा। तुम विश्वास रखो, वह अपने आपको परायों में घिरी अनुभव न करेगी। उसे वही आदर-सत्कार मिलेगा, जो उसे अपने घर में प्राप्त था। इस प्रकार दादा जी ने परेश को मनाया।

8) दादा जी ने किस अभिप्राय से सभी को बुलाया और क्या कहा?

दादा जी अपने परिवार को बरगद के पेड़ के समान मानते थे। वे किसी भी कीमत पर अपने परिवार को बिखरते हुए नहीं देख सकते थे। जब उन्हें पता चलता है कि छोटी बहू बेला परिवार से अलग होना चाहती है तब वे परिवार के सभी सदस्यों को बुलाते हैं और उनसे कहते हैं कि छोटी बहू को वही आदर सम्मान मिले जो उसे अपने घर में मिलता था। वह एक बड़े घर से आयी है और अत्यधिक पढ़ी-लिखी है। मेरी इच्छा है कि सब लोग उसकी बुद्धि और योग्यता का लाभ उठाएँ। उससे परामर्श लें और हो सके तो उसका काम भी आपस में बाँट लो। उसे पढ़ने-लिखने का अधिक अवसर दो। उसे इस बात का एहसास न हो कि वह दूसरे घर में आ गई है। कोई भी उसका निरादर न करे और न ही उसकी हँसी उड़ाये।

9) दादा जी की क्या आकांक्षा थी?

दादा जी अपने परिवार को एक बड़े बरगद के पेड़ के समान मानते थे। अगर पेड़ की एक भी डाली टूट कर अलग हो जाए तो फिर चाहे उसे कितना भी पानी दो उसमें सरसता नहीं आ सकती। जब उन्हें पता चलता है कि परेश अलग होनेवाला है तो वे परिवार के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते हैं कि कोई भी छोटी बहू का अनादर न करे। दादाजी की आकांक्षा थी कि वृक्ष की सभी डालियाँ साथ-साथ बढ़ें, फलें फूलें, जीवन की सुखद शीतल वायु के परस से झूमें और सरसाएँ। पेड़ से अलग होनेवाली डाली की कल्पना उनके अंदर कंपन पैदा कर देती थी। वे परिवार को वटवृक्ष के समान देखना चाहते थे।

10) घर के लोगों के व्यवहार में बदलाव देखकर बेला की क्या प्रतिक्रिया थी?

घर के लोगों के व्यवहार में बदलाव देखकर बेला की प्रतिक्रिया थी कि ये पहले तो ऐसे नहीं थे, अब कैसे बदल गये सभी-के-सभी। 'जी' कहकर पुकारना, काम न करने देना, आदर-सत्कार करना आदि...आदि। सचमुच बेला को भी लगा कि अब मुझे इनके साथ रहकर चलना होगा। दादा जी भी इससे खुश होंगे।

11) मालवी ने सारी-की-सारी छत क्यों और कैसे खोद डाली?

मालवी को लगा कि इस घर में कोई आनेवाला है। अतः उसका विरोध जताने के लिए सिर्फ दो ही घंटे पहले मजदूरों तथा राज ने जो छत डाली थी, मालवी ने सारी-की-सारी छत फावड़े से खोद डाली। बंसीलाल महाशय मुँह देखते रह गये। उनके आने तक अंतिम ईंट भी उखड़ चुकी थी।

12) बेला अपने मायके क्यों जाना चाहती थी?

बेला अपने मायके इसलिए जाना चाहती थी क्योंकि उसे ऐसा लगता था कि जैसे वह अपरिचितों में आ गयी है। कोई उसे नहीं समझता और वह किसी को नहीं समझती। जब वह जाती है तो बड़ी भाभी, मँझली और माँजी तक खड़ी हो जाती थीं। उसके सामने कोई हँसता नहीं। उससे अधिक समय तक कोई बात नहीं करना चाहता। सब उससे ऐसा डरती है जैसे मुर्गी के बच्चे बाज से। बेला अपने मायके जाना चाहती थी कि वह आदर, सत्कार, सुख, आराम चाहती थी।

13) इन्दु के मुँह से दादा जी की बात सुनकर बेला ने क्या कहा?

इन्दु ने बेला से दादाजी की बात कही, तो बेला ने कहा – किन्तु उन्होंने यह सब क्यों कहा? मैंने तो कभी उनसे इस बात की शिकायत नहीं की? मैं आदर नहीं चाहती और मैं तो तुम सबके साथ मिलकर काम करना चाहती हूँ। आप लोगों ने मुझे कितना गलत समझा और मैंने आप लोगों को। अब मैं तुम्हारे साथ सब काम मिल जुल कर करूँगी।

14) बेला ने भावावेश में रूँधे हुए कंठ से दादा जी से क्या कहा?

बेला ने भावावेश के कारण रूँधे हुए कंठ से दादाजी से कहा – दादाजी, आप पेड़ से किसी डाली का टूटकर अलग होना पसंद नहीं करते, पर क्या आप चाहेंगे कि पेड़ से लगी वह डाल सूख कर मुरझा जाय?....

15) दादा जी का चरित्र चित्रण कीजिए।

दादाजी परिवार के मुखिया हैं। वे संयुक्त परिवार के पक्षधर हैं। घर का प्रत्येक व्यक्ति उनका आदर करता है। दादाजी की खूबी यह है कि घर के प्रत्येक सदस्य की समस्य का समाधान बड़ी ही चतुराई से करते हैं। परिवार को वे एक वट-वृक्ष मानते हैं और घर के सदस्यों को उस वट-वृक्ष की डालियाँ। इसलिए वे एक भी डाली को टूटने नहीं देना चाहते। यहाँ तक कि उन्होंने कहा – मैं इससे सिहर जाता हूँ। घर में मेरी बात नहीं मानी गई, तो मेरा इस घर से नाता टूट जायेगा। इससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दादाजी का चरित्र श्रेष्ठ, धवल एवं सिद्धांतों से जुड़ा हुआ है।

16) बेला की चारित्रिक विशेषताओं पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

बेला एक प्रतिष्ठित तथा संपन्न परिवार की सुशिक्षित लड़की है। उसका विवाह परेश से हो जाता है। वह ससुराल में आकर अपने को नये घर के अनुसार ढाल नहीं पाती। वह पढ़ी-लिखी रहने के कारण सबको गँवार, नीच, हीन दृष्टि से देखती है। घर में छोटी बहू होने के कारण सब उसकी आलोचना करना व उसे आदेश देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। वह आज़ाद ख्याल की है। उसे दूसरों का हस्तक्षेप तथा दूसरों की आलोचना पसंद नहीं है। वह परेश से अलग गृहस्थी बसाने के लिए कहती है। दादा जी परिवार के सभी सदस्यों को बुलाकर कहते हैं कि कोई बेला का अनादर नहीं करेगा। परिवार के सभी लोग अब उसका आदर करने लगते हैं। वह आदर नहीं बल्कि सबके साथ मिल-जुलकर काम करना चाहती है। जब उसे पता चलता है कि यह बदलाव दादा जी के कहने से हुआ है तो वह भावावेश में दादा जी से कहती है – 'आप पेड़ से किसी डाली का टूट कर अलग होना पसंद नहीं करते, पर क्या आप ये चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी वह डाली सूख कर मुरझा जाय.....।'

17) परेश के सामने कौन सी समस्या आ खड़ी हुई और उसका किस प्रकार से समाधान हुआ?

परेश छोटी बहु बेला का पति है। उसकी पत्नी पढ़ी-लिखी है। घर में सभी उससे सही ढंग से व्यवहार न करने के कारण परेश धर्म-संकट में है। एक तरफ दादाजी का अनुशासन एवं कर्तव्य-पालन, तो दूसरी ओर पत्नी की समस्या। बेला का घर में मन न लगने से वह भी परेशान है। पत्नी के बारे में दादाजी से सब कुछ कह देता है। यह भी कि वह अलग घर बसाना चाहती है, जो दादाजी को पसंद नहीं। दादाजी संयुक्त परिवार का महत्व समझाते है, घर (परिवार) को वट-वृक्ष और सदस्यों को डाली बताते हैं। परेश दादाजी की सारी बातें मान लेता है। परिणाम भी अच्छा होता है। छोटी बहू में भी परिवर्तन हो जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि परिवार में परेश जैसा सहनशील पुत्र, पति होना चाहिए।

18) इन्दु का चरित्र चित्रण कीजिए।

इन्दु छोटी बहू (बेला) से कुछ नाराज थी। क्योंकि छोटी बहू सदा अपने मायके का गुणगान करती थी। बाकी लोगों को मूर्ख, गँवार और असभ्य समझती थी। मिश्रानी को काम से निकाल देने से भी इन्दु नाराज थी। वह भाभी को समझाती है कि नौकर से काम लेने की भी तमीज होनी चाहिए। इन्दु अधिकतर छोटी बहू के बारे में शिकायत करती रहती है – "सिर्फ जबान चलाने से क्या? काम भी तो करना चाहिए।" "क्यों, उसके हाथ नमक-मिट्टी के हैं, जो गल जायेंगे।" "उसे चौबीसों घंटे अपने मायके की पड़ी रहती है।" आदि... आदि...।

19) बड़ी बहू पर टिप्पणी लिखिए।

घर में जो बड़ी बहू होती है, उसकी बड़ी जिम्मेदारी भी हुआ करती है। वह सास के बराबर मानी जाती है। अपने से छोटे-सभी का ख्याल उसे रखना पड़ता है। वह घर के सभी सदस्यों को छोटी बहू के बारे में कहती है – उसे हमारा खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना पसन्द नहीं है, उसे हमारी हर बात से घृणा है। वह बेला से कहती है – हम आपसे छोटी हैं, वर्ग में भी और बुद्धि में भी.... वह सबके काम में हाथ भी बँटाती है। हँसी-मजाक भी खूब करती है। जैसे – "मैं तो फँस गयी झँझली की बातों में.... चलो.... चलो।"

20) मँझली भाभी पर टिप्पणी लिखिए।

मँझली बहू सदा दूसरों की हँसी उड़ाने में ही आनंद लेती है। स्वयं बात-बात पर हँसती रहती है। भाई के बारे में कहती है – आज भाई परेश की वह गति बनी कि बेचारा अपना-सा मुँह लेकर दादा जी के पास भाग गया। जबान है छोटी बहू की या कतरनी..... जब अंग्रेजी बोलने लगती है तो कुछ समझ में ही नहीं आता। परेश बेचारा अपना-सा मुँह लेकर रह जाता है। जाने तहसीलदार कैसे बन गया। कचहरी में होंगे तहसीलदार, घर में तो अपराधियों से भी गये बीते हैं। मालवी और बंसीलाल का भी मजाक उड़ाने में मँझली भाभी कभी चूकती नहीं। इस प्रकार छोटी बहू बेला के बारे में तथा घर के अन्य सभी सदस्यों के बारे में टीका-टिप्पणी करने में महारत हासिल है मँझली भाभी को।

20. प्रतिशोध

– डॉ. रामकुमार वर्मा

: प्रश्नोत्तर :

20.4 <u>एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए : [Text Book]</u>

1) *संस्कृत के महापंडित कौन हैं?*
संस्कृत के महापंडित भारवि के पिता श्रीधर हैं।

2) *संस्कृत के महाकवि कौन हैं?*
संस्कृत के महाकवि भारवि हैं।

3) *भारवि की माँ का नाम क्या है?*
भारवि की माँ का नाम सुशीला है।

4) *सुशीला किसके लिए बेचैन है?*
सुशीला अपने बेटे भारवि के न आने से बेचैन है।

5) *कवि किस पर शासन करता है?*
कवि समय पर शासन करता है।

6) *शास्त्रार्थ के नियमों में किसके हृदय को नहीं बाँधा जा सकता?*
शास्त्रार्थ के नियमों में माता के हृदय को नहीं बाँधा जा सकता।

7) *पुत्र को कौन निर्वासित कर सकता है?*
पुत्र को पिता निर्वासित कर सकता है।

8) *पुत्र को कब निर्वासित किया जा सकता है?*
पुत्र यदि अन्याय का आचरण करे, धर्म के प्रतिकूल चले तो उसे निर्वासित किया जा सकता है।

9) *शास्त्रार्थों में पंडितों को किसने पराजित किया?*
शास्त्रार्थों में पंडितों को भारवि ने पराजित किया।

10) *भारवि में किस कारण अहंकार बढ़ता जा रहा था?*
पंडितों की हार से भारवि में अहंकार बढ़ता जा रहा था।

11) *पिता क्या नहीं सहन कर सकता?*
पिता यह नहीं सहन कर सकता कि उसका पुत्र दंभी या घमण्डी हो।

12) *पिता ने भारवि की किन शब्दों में ताड़ना की?*
पिता ने भारवि की इन शब्दों में ताड़ना की – कि तू महामूर्ख है, दंभी है, अज्ञानी है।

13) *पंडित किस प्रकार भारवि का परिहास करने लगे?*
पंडित भारवि की ओर देखकर, उनके स्वर में ही बोलकर वे उसका परिहास करने लगे और ताली पीटने लगे।

14) *ग्लानि से भरे हुए भारवि को जाने से क्यों नहीं रोका गया?*
अनुशासन की मर्यादा रखने के लिए भारवि को जाने से नहीं रोका गया।

15) *अनुशासन की मर्यादा पर क्या किया जा सकता है?*
अनुशासन की मर्यादा पर बड़े से बड़े व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है।

16) *श्रीधर पंडित का पुत्र क्या नहीं हो सकता?*
श्रीधर पंडित का पुत्र इतना पतित नहीं हो सकता।

17) *श्रीधर पंडित के घर की सेविका का नाम लिखिए।*
श्रीधर पंडित के घर की सेविका का नाम आभा है।

18) *सुशीला किसको खोजकर लाने के लिए आभा से कहती है?*
सुशीला अपने पुत्र भारवि को खोजकर लाने के लिए कहती है।

19) *प्रेम के बिना किसका मूल्य नहीं है?*
प्रेम के बिना अनुशासन का मूल्य नहीं है।

20) *श्रीधर पंडित भारवि को खोजने के लिए किसका सहारा लेना चाहते थे?*
श्रीधर पंडित भारवि को खोजने के लिए राजकीय सहायता लेना चाहते थे।

21) *शास्त्रार्थ के लिए जाते समये भारवि नें किस रंग के कपड़े पहने हुए थे?*
शास्त्रार्थ के लिए जाते समय भारवि ने कौशेय वस्त्र, पीतरंग का अधोवस्त्र और नील रंग का उत्तरीय पहने थे।

22) *भारवि से मिलने आयी स्त्री का नाम लिखिए।*
भारवि से मिलने आई स्त्री का नाम भारती है।

23) *वसंत ऋतु में किसके स्वर से सभी परिचित हैं?*
वसंत ऋतु में कोकिल के स्वर से सभी परिचित हैं।

24) *ब्रह्म ज्ञान किसकी वीणा पर नृत्य करने के समान था?*
ब्रह्मज्ञान सरस्वती की वीणा पर नृत्य करने के समान था।

25) *भारती ने भारवि को कहाँ देखा था?*
भारती ने भारवि को मालिनी-तट पर देखा था।

26) *भारती ने जब भारवि को देखा तो उनकी स्थिति कैसी थी?*
भारती ने जब भारवि को देखा, तो वे उस वक्त ध्यानमग्न थे, लगता था कि वे भारती की उपासना कर रहे थे।

27) *बीज से दूर रहने पर भी फूल क्या नहीं होता?*
बीज से दूर रहने पर भी फूल मलिन नहीं होता।

28) *भारवि के पिता को किसके पांडित्य को देखकर प्रसन्नता होती थी?*

भारवि के पांडित्य को देखकर उसके पिता को हार्दिक प्रसन्नता होती थी।

29) *अहंकार किसमें बाधक है?*

अहंकार उन्नति में बाधक है।

30) *पिता के क्रोध में किसके प्रति मंगल कामना छिपी है?*

पिता के क्रोध में पुत्र की मंगल कामना छिपी है।

31) *तलवार का प्रमाण किसका प्रमाण है?*

तलवार का प्रमाण निर्बलों का प्रमाण है।

32) *जीवन से क्या उत्पन्न होती है?*

जीवन से ग्लानि उत्पन्न होती है।

33) *ब्रह्म का निवास कहाँ होता है?*

मस्तक में स्थित सहस्रदल में ब्रह्म का निवास होता है।

34) *भारवि के अनुसार क्या जघन्य पाप है?*

भारवि के अनुसार आत्महत्या जघन्य पाप है।

35) *भारवि को अपमान किसके समान खटक रहा था?*

भारवि को अपमान शूल के समान खटक रहा था।

36) *भारवि ने प्रतिशोध की आग में क्या करना चाहा?*

भारवि ने प्रतिशोध की आग में पिता की हत्या करना चाहा।

37) *पितृ-हत्या का दण्ड क्या नहीं है?*

पितृ-हत्या का दण्ड प्रतिशोध या पुत्र-हत्या नहीं है।

38) *भारवि के अनुसार जीवन का सबसे बड़ा अपराध क्या है?*

भारवि के अनुसार जीवन का सबसे बड़ा अपराध जीवन को चिंता में घुलाना, पाप में लपेटना और दुःख में बिलखाना है।

39) *'प्रतिशोध' एकांकी के एकांकीकार का नाम लिखिए।*

'प्रतिशोध' एकांकी के एकांकीकार डॉ. रामकुमार वर्मा हैं।

40) *भारवि किस महाकाव्य की रचना कर महाकवि भारवि बने?*

भारवि 'किरातार्जुनीयम' महाकाव्य की रचना कर महाकवि भारवि बने।

अतिरिक्त प्रश्न : [Question Bank]

41) *भारवि किससे तलवार लेकर आया था?*

भारवि मित्र विजयघोष से तलवार लेकर आया था।

20.5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [Text Book]

1) भारवि से संबंधित माता-पिता के बीच होने वाले प्रारंभिक संवाद का सार लिखिए।

भारवी से संबंधित माता-पिता के बीच होनेवाला प्रारंभिक संवाद इस प्रकार से है – भारवि के पिता श्रीधर अपनी पत्नी सुशीला को वेद सुना रहे हैं। सुशीला का ध्यान कहीं और है क्योंकि अभी तक उसका पुत्र घर नहीं आया। श्रीधर कहते हैं कि भारवि शास्त्रार्थ में पण्डितों को पराजित करता जा रहा था और इस वजह से उसका घमण्ड बढ़ता जा रहा था। मैंने उसे ताड़ना दी क्योंकि मैं चाहता था कि मेरा पुत्र सुमार्ग पर चले। इसके लिए कभी-कभी ताड़ना अनिवार्य हो जाती है। सुशीला कहती है कि माँ के हृदय को शास्त्रार्थ के नियमों में नहीं बाँधा जा सकता।

2) शास्त्रार्थ में पंडितों को हराते देख पिता ने भारवि के बारे में क्या सोचा?

शास्त्रार्थ में पंडितों को हराते देख पिता ने भारवि के बारे में सोचा कि पंडितों की हार से उसका अहंकार बढ़ता जा रहा है। उसे अपनी विद्वता का घमंड हो गया है। उसका गर्व सीमा को पार कर रहा है। भारवि आज संसार का श्रेष्ठ महाकवि है। दूर-दूर के देशों में उसकी समानता करने वाला कोई नहीं है।

उसने शास्त्रार्थ में बड़े से बड़े पण्डितों को पराजित किया है। उसका पांडित्य देखकर पिता को बहुत प्रसन्नता होती है। पर भारवि के मन में धीरे-धीरे अहंकार बढ़ता जा रहा है। पिता चाहते हैं कि भारवि और भी अधिक पंडित और महाकवि बने। पर अहंकार उन्नति में बाधक है। इसलिए पिता ने अहंकार पर अंकुश रखना चाहा। जिसे अपने पांडित्य का अभिमान हो जाता है वह अधिक उन्नति नहीं कर सकता। इसी कारण से पिता भारवि को समय-समय पर मूर्ख और अज्ञानी कहते हैं। पिता नहीं चाहते हैं कि अहंकार के कारण उसके पुत्र की उन्नति रुक जाये।

3) सुशीला के अनुरोध पर श्रीधर ने भारवि को कहाँ-कहाँ और कैसे तलाश करने का वचन दिया?

जब पुत्र भारवि वापस नहीं लौटा तो माता सुशीला बहुत चिंतित हो गई। बार-बार अपने पुत्र की खोज के लिए पति श्रीधर से आग्रह करने लगी। श्रीधर हिम्मत करते हुए कहते हैं कि पुत्र तो है ही, किन्तु वह संसार का जनक भी है। अपनी कल्पना से वह न जाने कितने संसारों का निर्माण कर सकता है। श्रीधर उसे जनपदों से खोज लाने का वादा करते हैं, राजकीय सहायता लेकर उसको खोजने की बात करते है। सुशीला को शांत रहने के लिए कहते हैं।

4) भारती और सुशीला के वार्तालाप को अपने शब्दों में लिखिए।

भारती महाकवि भारवि के शास्त्रार्थ से प्रभावित होकर उनसे मिलने के लिए उनके घर आती है। भारवि उस समय घर पर नहीं थे। भारती ने सुशीला को बताया कि उसने भारवि को उषा वेला में मालिनी तट पर देखा था। उस समय भारवि ध्यान मग्न थे। उसने उनका ध्यान भग्न नहीं किया। श्रीधर ने भारती से कहा कि जैसे ही भारवी आएगा तुम्हें उसकी सूचना दे दी जाएगी। भारती ने कहा कि वह स्वयं अगले दिन सुबह आएगी।

5) भारवि अपने पिता से क्यों बदला लेना चाहता था?

भारवि के पिता श्रीधर भरी सभा में उसका अपमान करते हैं। वहाँ बैठे हुए सभी पंडित भारवि के स्वर में ही बोलकर उसका परिहास करते हैं। इस वात को भारवि अपने दिल से लगा लेता है और उसके मन में यह बात घर कर जाती है कि पिता ने सब के सामने उसका अपमान किया। उनके रहते वह अपनी जिन्दगी में आगे नहीं बढ़ सकता। इस वजह से पिता के प्रति उसका क्रोध अंतिम सीमा तक पहुँच जाता है और वह अपने पिता से बदला लेना चाहता था।

6) 'अहंकार उन्नति में बाधक है।' एकांकी के आधार पर श्रीधर के इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

श्रीधर का यह कथन 'अहंकार उन्नति में बाधक है' बहुत ही सार्थक प्रतीतं होता है। भारवि श्रीधर का पुत्र था। वह शास्त्रार्थ में पंड़ितों को पराजित करता जा रहा था। उसके साथ ही साथ उसके अंदर घमंड की भावना बढ़ती जा रही थी। यह श्रीधर के बर्दाश्त के बाहर था। उन्होंने भरी सभा में अपने पुत्र को उग्र रूप से ताड़ना दी। उसे महामूर्ख, दंभी और अज्ञानी कहा। वे उसका भला चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि अहंकार या दंभ उसके पुत्र के मार्ग मे बाधक बने। अहंकार व्यक्ति को आगे बढ़ने से रोकता है। उसकी प्रतिभा का भी एक प्रकार से हनन करता है। अनुशासन के बिना व्यक्ति जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता और वह आगे बढ़ भी गया तो अपने जीवन में सफल नहीं हो सकता।

7) ग्लानि और जीवन के संबंध में श्रीधर के क्या विचार हैं?

ग्लानि और जीवन के संबंध में श्रीधर के विचार इस प्रकार हैं – ग्लानि से जीवन उत्पन्न नहीं होता। जीवन से ग्लानि उत्पन्न होती है। इस तरह ग्लानि प्रधान नहीं है, जीवन प्रधान है। श्रीधर अपने पुत्र भारवि से कहते हैं कि जब तुम जीवन के अधिकारी हो तो जीवन की शक्ति से ही ग्लानि को दूर करो, तलवार की अपेक्षा क्यों करते हो? तुम्हारे हाथों में लेखनी चाहिए, तलवार नहीं। ग्लानि काले बादल के समान है जो जीवन के चंद्र को मिटा नहीं सकता। कुछ क्षणों के लिए उसके प्रकाश को रोक ही सकता है। ग्लानि के पोषण के लिए ब्रह्मदेव की आवश्यकता नहीं है।

8) प्रायश्चित को लेकर पिता और पुत्र के बीच हुए संवाद को लिखिए।

प्रायश्चित को लेकर पिता और पुत्र के बीच का संवाद इस प्रकार है – भारवि क्रोध और ग्लानि से भरकर अपने पिता श्रीधर की हत्या करना चाहता था। जब उसे पता चलता है कि उसके पिता की ताड़ना के पीछे उनकी शुभकामनाएँ और मंगल कामनाएँ छिपी हैं तो वह दुखी हो जाता है। उसने अपने पिता से कहा कि वह अपने अपराध के लिए प्रायश्चित करना चाहता है। पिता कहते हैं कि पश्चाताप ही प्रायश्चित है। वे उसे माँ की सेवा कर अपने जीवन को सफल बनाने के लिए कहते हैं। भारवि कहता है – माता की सेवा तो मेरे जीवन की चरम साधना है ही लेकिन यदि आप चाहते हैं कि आपका पुत्र भारवि जीवित रहे तो उसे दण्ड दीजिए। पुत्र के बहुत कहने पर वे उसे दण्ड देते हैं – छः मास तक ससुराल में जाकर सेवा करना और जूठे भोजन पर अंपना पोषण करना। भारवि उसे सहर्ष स्वीकार कर लेता है।

9) भारवि ने अपने पिता से किस प्रकार का दण्ड चाहा और उसे क्या दण्ड मिला?

भारवि बदले की आग में जलते हुए अपने पिता की हत्या करना चाहता था। पिता की प्रताड़ना के पीछे उनकी मंगलकामनाओं का पता चलने पर वह लज्जित हो गया। उसने पिता से तलवार से उसका मस्तक काटने को कहा जिससे उसकी ग्लानि भी कट जाए। पिता कहते हैं कि पितृ-हत्या का दंड पुत्र-हत्या नहीं है। वे भारवि को क्षमा कर देते हैं। भारवि कहता है कि पाप के लिए न सही, उसके प्रायश्चित के लिए भी तो कुछ व्यवस्था होनी चाहिए। वह कहता है कि यदि आप चाहते हैं कि आपका भारवि जीवित रहे तो उसे दंड दीजिए। उसके पिता उसे छः मास तक ससुराल में जाकर सेवा करने तथा जूठे भोजन पर अपना पोषण करने का दंड देते हैं।

10) निम्नलिखित पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए :

9) महापंडित श्रीधर

महापण्डित श्रीधर संस्कृत के महापण्डित थे। उनका पुत्र महाकवि था और वह शास्त्रार्थ में पण्डितों को पराजित करता चला जा रहा था। इससे उसका अहंकार बढ़ता जा रहा था। उसे अपनी विद्वता का घमंड हो गया था। श्रीधर अपने पुत्र को सही राह पर लाना चाहते थे। वे अपने पुत्र को ताड़ना देते हैं क्योंकि वे उसका भला चाहते हैं। अहंकार व्यक्ति को आगे बढ़ने से रोकता है। वे एक आदर्श पिता का फर्ज़ निभाते हुए अपने पुत्र को सही राह पर लाने के लिए ताड़ना देते हैं। उनका पुत्र उन्हें गलत समझता है लेकिन अपने पिता के उद्देश्य का पता चलने पर वह लज्जित हो जाता है। वह अपनी गलती के लिए प्रायश्चित करना चाहता है। इस तरह श्रीधर का चरित्र उच्च कोटि का है।

२) सुशीला

सुशीला महापंडित श्रीधर की पत्नी तथा महाकवि भारवि की माता है। अपने विद्वान पुत्र पर पिता की तरह इसे भी गर्व है। वह अपने पुत्र भारवि के घर न लौटने के कारण दुःखी है। वह पुत्र शोक में सो नहीं पाती। वह मानती है कि यदि पुत्र के लिए माँ की ममता मूर्खता है तो ऐसी मूर्खता हमेशा बनी रहे। पति के समझाने पर भी पुत्र-मोह कम नहीं होता। पुत्र के व्यामोह में वह अपने पति से भी काफी वाद-विवाद करती है, परन्तु अपनी मर्यादा में रहकर, अपने पति-धर्म को निभाती है।

३) महाकवि भारवि

भारवि संस्कृत के महाकवि थे जो आगे चलकर 'किरातार्जुनीयम' महाकाव्य की रचना करते हैं। भारवि शास्त्रार्थ में पंडितों को पराजित कर रहे थे। उनके अंदर पंडितों की हार से अहंकार बढ़ता जा रहा था। उन्हें अपनी विद्वत्ता का घमंड होता जा रहा था। उनका गर्व सीमा का अतिक्रमण कर रहा था। उनके पिता श्रीधर भरी सभा में उन्हें ताड़ते हैं। भारवि उनसे बदला लेना चाहता है। जब भारवि को पिता का उनके प्रति मंगलकामना का पता चलता है तो वे विचलित हो जाते हैं। अपनी गलती पर पछताते हुए पिता से दण्ड माँगते हैं। इस तरह भारवि के चरित्र का पता चलता है कि उन्हें अपनी गलती का पछतावा है। वे पिता द्वारा दिए हुए दण्ड को सहर्ष स्वीकार करते हुए पालन करने की आज्ञा माँगते हैं।

11) टिप्पणी लिखिए :

9) आभा

'आभा' भारवि की सेविका है। जब सुशीला ने उससे पूछा कि आभा, भारवि नहीं आया? तो आभा ने कहा - अब तक कवि नहीं आये? मैं तो समझती थी कि वह इस समय तक आ गये होंगे। मैं अभी जाती हूँ, उन्हें खोजकर लाती हूँ। आप भोजन कर लीजिए। मुझे क्षमा करें। एक निवेदन और है – महाकवि से परिचित एक युवती प्रवेश चाहती है। वह स्वामी के दर्शन की अभिलाषा रखती है। 'आभा' सच्ची सेविका है।

२) भारती

भारती एक विदुषी है। भारती के हृदय में महाकवि भारवि के प्रति श्रद्धा की भावना है। वह सुशीला से कहती है कि वसंत ऋतु में कोकिल के स्वर से कौन परिचित नहीं? गत पूर्णिमा के पर्व में उन्होंने जो शास्त्रार्थ किया, वह बहुत महत्व का है। आज तक वेदान्त की इतनी सुन्दर मीमांसा मैंने नहीं सुनी, जैसी महाकवि भारवि के मुख से सुनी। वीणापाणि को भी 'भारती' ही कहते हैं। वे उस भारती की उपासना कर रहे थे। भारती सुशीला तथा श्रीधर का सम्मान करती है।